कई बहादुर अफगानी महिलाएं और लड़कियां लड़ रही हैं, गोपनीय तरीके से उनकी पढ़ाई जारी है। तालिबान द्वारा अपना यह अधिकार छीने जाने को वे नकार रही हैं। उन्हें हमारे समर्थन की दरकार है और वे इसकी हकदार भी हैं- मलाला यूसुफजई / नोबेल विजेता

गरीबी-उन्मूलन के लिए सरकार ने कुछ योजनाएं जरूर चलाई हैं, पर कुवैत में जल मरे भारतीय और नोएडा की एक आलीशान इमारत के बाहर जानलेवा गर्मी से तड़पकर मरे कौशलेंद्र यादव के साथ जो हुआ, वह कई सवाल भी खड़े करता है। संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र को इनके उत्तर का इंतजार है।

स्कैन करें
आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

कौन था कौशलेंद्र यादव

शशि शेखर

आजकल

'मृतक कौशलेंद्र यादव, पुत्र : विनोद कुमार, उम्र : करीब 27 वर्ष, निवासी : ग्राम मिलिक, थाना- कुर्रा, जिला- मैनपुरी। हाल पता : कोंडली गांव में अमित यादव के मकान में किराये पर। थाना- नॉलेज पार्क, गौतमबुद्ध नगर।'

इस थाने की फर्द आगे बताती है- '18 जून को कौशलेंद्र के जीजा अभिषेक ने बताया कि उसे पहले बुखार आया था। वह घर पर ही दवा लेता रहा। दूसरे गार्ड ने बताया कि कौशलेंद्र की तबीयत ज्यादा खराब थी। पहले सोसायटी के पास ही एक बंगाली डॉक्टर को दिखाया, तो ज्यादा खराब हालत बताई गई। उसके बाद कौशलेंद्र को जिम्स ले गए, जहां पर तीन घंटे तक इलाज चला और उसकी मौत हो गई, जिसे डॉक्टरों ने हीटस्ट्रोक बताया था।'

ये चंद पंक्तियां देश के बेहद बड़े वर्ग की बेबसी की करुण-गाथा सामने लाती हैं।

कौशलेंद्र यादव जवान था। उसकी शादी हो चुकी थी। पत्नी गांव में रहती है और वह इस उम्मीद से इस महानगर में आया होगा कि दिन-रात खटकर अपने बच्चों को बेहतर भविष्य दे सकूंगा। शायद उसने यह भी सोचा हो कि बहुत न कर सका, तो इतना कर ही लूंगा कि मुझ जैसी जिंदगी उनकी न हो। कौशलेंद्र की आज तेरहवीं है। *गरुड़ पुराण* के अनुसार, तेरहवीं के बाद आत्मा इस संसार से विदा ले लेती है। लोग मरने के बाद कहां जाते हैं? कोई परमात्मा या आत्मा होती है या नहीं, मैं इस बहस में पड़े बिना बस इतना पूछना चाहूंगा कि क्या कौशलेंद्र को अपने बच्चों की बेहतरी का ख्वाब बुनने का हक नहीं था?

उसकी मौत उन तमाम गुलाबी आंकड़ों का उपहास उड़ाती है, जो सियासी शोशेबाजी के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

कौशलेंद्र नोएडा आकर किसी तरह गार्ड की नौकरी हासिल कर सका था। एक आलीशान सोसायटी के मुख्य दरवाजे पर उसकी ड्यूटी थी। बिना किसी छत अथवा आड़ के लगातार 12 घंटे उसे वहीं बिताने होते थे। उस दिन तापमान 45 डिग्री पार कर गया था। भयंकर लू सांसों को वजनी बना रही थी। उसकी जर्जर देह इस दाहक ताप को बर्दाश्त न कर सकी। वह पिछले बीस बरसों में हमारे बीच पनपी उस गार्ड बिरादरी का सदस्य था, जिससे हर मौसम में हमेशा सजग और सतर्क रहने की उम्मीद की जाती है।

लोग उन्हें 'हायर' कर खुद की नींद और चैन जुटाना चाहते हैं, पर बदले में इन्हें क्या मिलता है? बमुश्किल पंद्रह हजार रुपये महीना।

कौशलेंद्र और उस जैसे लोग जिस वर्ग से आते हैं, उसी वर्ग से हमारी माननीय राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री भी आते हैं। वह जिस यादव जाति में जन्मा था, उत्तर प्रदेश और बिहार में उसकी तूती बोलती है। बरसों तक स्वर्गीय मुलायम सिंह मैनपुरी के सांसद रहे और अब डिंपल यादव उसका प्रतिनिधित्व देश की सबसे बड़ी पंचायत में करती हैं। हमारे राजनेता प्रतीकवाद पर चुनाव लड़ते हैं। जो लोग उन पर भरोसा कर वोट देते हैं, उनकी हालत कैसी है?

कौशलेंद्र और उस जैसे हजारों का हतभागी हश्र इस सवाल का मुकम्मल जवाब है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, पहली मार्च से 20 जून के बीच में चालीस हजार से अधिक लोग लू की चपेट में आए। इनमें से 143 को नहीं बचाया जा सका। इनमें से अधिकांश गरीब-गुरबा रहे होंगे। क्यों? जवाब जान लीजिए। गए रविवार को दिल्ली के सरकारी अस्पतालों में तापलहरी के 75 शिकार भर्ती थे। इनमें से अधिकांश दैनिक श्रमिक, डिलीवरी ब्वॉय अथवा बुजुर्ग थे। हमने मौसमी रोजगारों के रूप में मौसम के नए शिकार जन दिए हैं।

नीति आयोग की एक रिपोर्ट के मुताबिक, साल 2014 से 2023 के बीच के नौ बरसों में 'बहु-आयामी गरीबी' की खाई से 24.82 करोड़ भारतीय उबर चुके हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में भी 'बहु-आयामी गरीबी' में गिरावट दर्ज की गई। यहां आपके मन में यकीनन सवाल उभर रहा होगा कि क्या है बहु-आयामी गरीबी? बहु-आयामी गरीबी की सरकारी परिभाषा के तहत एक ऐसा व्यक्ति, जो आय ही नहीं, बल्कि भूमि-आवास, स्वास्थ्य सेवाओं, स्वच्छ पेयजल, शिक्षा और बिजली जैसी कई चीजों तक पहुंच के लिहाज से भी वंचित है।

कौशलेंद्र इस हिसाब से 'बहु-आयामी निर्धन' नहीं था।

इसमें कोई दोराय नहीं कि हम संसार की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में एक हैं, लेकिन इस गुनगुने सच के पीछे एक गम भरा अंधेरा भी छाया हुआ है। 'वर्ल्ड इनइक्विलिटी लैब' की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत आर्थिक विषमता के मामले में भी नई ऊंचाइयां हासिल कर रहा है। हिन्दुस्तान की शीर्ष एक फीसदी अमीर आबादी के पास देश की कुल संपत्ति का 53 फीसदी हिस्सा है। अगर आमदनी की सबसे ऊंची सीढ़ियों पर बैठे लोगों की इस सूची को थोड़ा-सा विस्तार दे दिया जाए, तो और अधिक चौंकने की बारी आती है। देश की कुल मिल्कियत का 77 प्रतिशत इसके दस प्रतिशत धनाढ्य अपने हक-हुकूक में रखते हैं।

क्या वे उतना ही खर्च भी करते हैं, ताकि सरकार को अधिक आमदनी हो और वह बेहतर कल्याणकारी योजनाएं चला सके?

ऑक्सफैम की रिपोर्ट 'सर्वाइवल ऑफ द रिचेस्ट इंडिया स्टोरी' के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2021-22 में भारत के सकल वस्तु एवं सेवा कर संग्रह का लगभग 64.3 प्रतिशत हिस्सा उस आधी आबादी की जेब से आया, जो कमाई के मामले में कतार की पिछली तरफ खड़ी थी। जिन दस प्रतिशत धनाढ्य लोगों के पास 77 प्रतिशत संपत्ति है, उनका जीएसटी में योगदान पांच प्रतिशत से ज्यादा नहीं है। यही रिपोर्ट बताती है कि कुछ महीने पहले खत्म हुए वित्तीय वर्ष में विषमता की यह खाई अधिक चौड़ी होने की आशंका है।

अभी तक उसके आंकड़े सामने नहीं आ सके हैं।

गरीबों और वंचितों की एक बड़ी दिक्कत यह भी है कि उनमें से बहुतों को अपना व अपने बच्चों का पेट पालने के लिए 'परदेस' जाना ही होता है। पिछली जनगणना बताती है कि देश के भीतर एक से दूसरे राज्य में जाकर आजीविका कमाने वाले भारतीयों की तादाद तब की आबादी का 33 प्रतिशत, यानी 45.36 करोड़ थी। एक अन्य शोध के अनुसार, एक करोड़ अस्सी लाख भारतीय देश के बाहर काम कर रहे हैं। इनमें से हरेक तो किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी का सीईओ या बड़ा एग्जिक्यूटिव बनता नहीं। नतीजतन, उन्हें वहां भी कुआं खोदकर पानी पीने का अभिशाप झेलना पड़ता है। बदले में मिलता क्या है? कुवैत की घटना इसका उदाहरण है। तबेले जैसी रिहाइश की आग में 45 भारतीय पिछले पखवाड़े जल मरे थे।

गरीबी-उन्मूलन के लिए सरकार ने कुछ योजनाएं जरूर चलाई हैं, पर कुवैत में जल मरे भारतीय और नोएडा की एक आलीशान इमारत के बाहर जानलेवा गर्मी से तड़पकर मरे कौशलेंद्र यादव के साथ जो हुआ, वह कई सवाल भी खड़े करता है। संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र को इनके उत्तर का इंतजार है।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीना इसी का नाम है

अब्दुल्लाही मिरे
पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता

हर शरणार्थी बच्चे के हाथों में किताब थमाने का इरादा

होदान बशीर नाम की लड़की ने एक दिन कुछ झिझकते हुए उनसे कहा- 'भाई, क्या मेरे लिए जीव विज्ञान की किताब खरीद देंगे?' होदान डॉक्टर बनना चाहती थीं। उनकी लरजती आवाज के पीछे की उत्कंठा, शर्म और बेबसी को अब्दुल्लाही मिरे से बेहतर भला कौन पढ़ सकता था?

क्या कभी आपने यह सोचा है कि जिन देशों या इलाकों पर अचानक कोई आक्रांता टुकड़ी धावा बोलती है या जहां बागी गुट कहर बरपाने लगते हैं, वहां सबसे ज्यादा नुकसान किसे उठाना पड़ता है? ऐसी हर स्थिति के सबसे निर्मम शिकार मासूम बच्चे बनते हैं। जिंदगी को जानने से कब्ल मौत उन पर झपट्टा मारती है और अगर जिंदा बच गए, तो आगे दशकों का उनका सफर लावारिस या शरणार्थी के रूप में ही तय होता है। अब्दुल्लाही मिरे ऐसे हजारों मासूमों के लिए किसी रहबर से कम नहीं, और इसीलिए संयुक्त राष्ट्र ने उन्हें 2023 के 'नानसेन शरणार्थी पुरस्कार' से नवाजा है।

साल 1991 में मिरे के माता-पिता जब सोमालिया में भड़के भीषण गृहयुद्ध से जान बचाकर भागे, तब वह बमुश्किल तीन साल के थे। उनके माता-पिता को लगा था कि कुछ महीनों में शांति स्थापित हो जाएगी, तो वे अपने घर लौट आएंगे। मगर विरोधी कबाइली गुट ने उनके कस्बे 'कोरीओली' पर कब्जा उसे खाली कर देने के लिए नहीं किया था, वह इलाका खेती-किसानी के लिहाज से काफी समृद्ध जो था। जाहिर है, घरेलू जंग बढ़ती चली गई और सोमालिया विफल राष्ट्र का दामन फिर कभी न छोड़ पाया। बहरहाल, मिरे के माता-पिता को केन्या के दादाब शरणार्थी शिविर में पनाह मिल गई थी, पर कहां कोरीओली की आजाद जिंदगी और कहां तरह-तरह की बंदिशों में घिरा शरणार्थी जीवन! सुकून सिर्फ इतना था कि हतभागियों की उस बस्ती में ज्यादातर सोमालियाई थे, जिनके साथ जुबान और दर्द की साझेदारी थी। तीन साल के अबोध मिरे के लिए यह अनोखी जगह थी, जहां वह अपने माता-पिता के साथ 'प्लास्टिक शीट' की छत वाली झोंपड़ी में रह रहे थे। उन प्लास्टिक की पन्नियों पर कुछ शब्द छपे थे, जो फर्श पर लेटे मिरे के ऊपर सूरज की रोशनी में जादुई असर डालते। बालक मन में जिज्ञासा पैदा होने लगी थी कि आखिर ये कैसी आकृतियां हैं?

पिता ने उन अक्षरों के मतलब बता दिए थे, मगर वह यह भी जानते थे कि इल्म तक पहुंचने के लिए उनके बेटे को मुकम्मल तालीम की जरूरत होगी। बतौर शरणार्थी उन्हें जो थोड़ी-बहुत सहूलियतें हासिल थीं, उनमें से एक शिविर में संचालित स्कूल में बेटे को पढ़ा सकने की सुविधा भी थी। मिरे का दाखिला हो गया और चंद सालों में उन्हें यह एहसास भी हो गया कि शरणार्थी शिविर की चुनौतियों से बाहर निकलने की एक ही राह है- शिक्षा! जाहिर है, जरूरत और दिलचस्पी, दोनों ने मिरे को गढ़ना शुरू कर दिया।

हाईस्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद बस्ती के ज्यादातर बच्चे किसी न किसी काम की तलाश में जुट जाते थे, ताकि वे अपने परिवार का बोझ बांट सकें, मगर मिरे की इच्छा ऊंची तालीम हासिल करने की थी। लिहाजा, उन्होंने स्कॉलरशिप

के लिए प्रतियोगी परीक्षा दी और वह उसमें कामयाब भी हो गए। मिरे पत्रकारिता की पढ़ाई करना चाहते थे, क्योंकि दादाब शिविर की रिपोर्टिंग करते पत्रकारों से वह बहुत प्रभावित थे। केन्याता विश्वविद्यालय से 2014 में 'पीआर, कम्यूनिकेशन ऐंड मीडिया स्टडीज' में स्नातक करने के बाद मिरे के पास काम की कभी कमी नहीं रही। अंशकालिक पत्रकार के तौर पर उन्होंने *अल-जजीरा, एएफपी, बीबीसी* आदि कई प्रतिष्ठित मीडिया संस्थानों के लिए काम किया। इसी कारण वह नॉर्वे चले आए थे और वहीं बसने का विचार करने लगे थे।

साल 2017 की बात है। एक रिपोर्ट तैयार करने के सिलसिले में मिरे हागडेरा माध्यमिक स्कूल पहुंचे थे। वहां होदान बशीर नाम की लड़की ने एक दिन कुछ झिझकते हुए उनसे कहा- 'भाई, क्या मेरे लिए जीव विज्ञान की किताब खरीद देंगे?' होदान डॉक्टर बनना चाहती थीं। उनकी लरजती आवाज के पीछे की उत्कंठा, शर्म और बेबसी को मिरे से बेहतर भला कौन पढ़ सकता था? अब्दुल्लाही मिरे को लगा अपने नाम और जीवन को सार्थक करने का इससे बेहतर जरिया दूसरा नहीं हो सकता। अब्दुल्लाही का मतलब ही होता है- खुदा का खिदमतगार! उन्होंने होदान के लिए न सिर्फ किताब खरीदी, बल्कि उन जैसे सभी शरणार्थी बच्चों की मदद का प्रण भी उसी पल कर लिया। नॉर्वे में बसने का ख्याल त्यागकर वह अपनों के बीच नैरोबी लौट आए।

लगभग तीन लाख की आबादी वाले दादाब शरणार्थी शिविर के बच्चों के बीच किताबों की किल्लत थी। होदान जैसी 15 लड़कियों को जीव विज्ञान की एक किताब से काम चलाना पड़ रहा था। लड़के तो फिर भी रातों में 'ग्रुप स्टडी' कर सकते थे, मगर सुरक्षा के लिहाज से लड़कियों के लिए यह मुमकिन न था। इसलिए मिरे ने सोशल मीडिया पर 'किताब के लिए दान' मुहिम शुरू की और अपने दूसरे संपर्कों के जरिये करीब 20 हजार किताबें एकत्र कीं। बच्चों में उनको बांटकर मिरे को काफी सुकून मिला। उसने उन्हें 2018 में 'शरणार्थी युवा शिक्षा केंद्र' शुरू करने को प्रेरित किया।

इसी संगठन के जरिये उन्होंने दादाब के तीन सार्वजनिक पुस्तकालयों के लिए लगभग 60,000 किताबें जुटाईं। आज संयुक्त राष्ट्र, अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन, कतर और अफ्रीका की मदद से मिरे के इस संगठन के सात पूर्णकालिक शिक्षक-कर्मचारी और सौ से अधिक स्वयंसेवक शरणार्थी बच्चों को पढ़ा रहे हैं और वहां की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में

प्रतिष्ठित नानसेन शरणार्थी पुरस्कार के रूप में संयुक्त राष्ट्र से मिरे को 83 लाख रुपये से अधिक की जो धनराशि मिली है, वह उस रकम से दादाब शिविर के हर उस मासूम बच्चे को किताब थमाना चाहते हैं, जिसे किसी अब्दुल्लाही मिरे की तलाश है।

मदद कर रहे हैं। मिरे की इस पहल ने कई शरणार्थी बच्चों को प्रिंस्टन जैसी प्रतिष्ठित अमेरिकी विश्वविद्यालयों में पहुंचा दिया है। यहां के कई बच्चे आज अच्छे शिक्षक, लेखक व पत्रकार हैं। तालीम ने उनके लिए कई दरीचे खोल दिए हैं।

नानसेन शरणार्थी पुरस्कार के रूप में अब्दुल्लाही मिरे को 83 लाख रुपये से अधिक की धनराशि मिली है। वह इस रकम से दादाब के हर उस मासूम को किताब थमाना चाहते हैं, जिसे किसी अब्दुल्लाही मिरे की तलाश है।

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

बाहिया बाकरी
प्रसिद्ध फ्रांसीसी छात्रा

मुसीबत कैसी भी हो हिम्मत न हारिए

मां का भय सागर के एकांत में भी काम कर रहा था। घना अंधेरा था, कभी-कभी कोई सितारा चमक उठता था। वह कभी सिर उठाकर देखती थी, तो हर तरफ पानी ही पानी था, पता नहीं कहां तक पानी होगा, पर मां जब नाराज होगी, तो कुछ नहीं सुनेगी।

जिंदगी हिम्मत और अलहदा सोचने की बुनियाद पर खड़ी हो जाए, तो कामयाब हो जाती है। अफसोस, इस दौर में डर-डरकर जीने वाले इतने हो गए हैं कि गिनना मुश्किल है। कई लोग यही सोचकर हिम्मत हार जाते हैं कि आगे एक मुश्किल मुकाम है। बहुत से लोग बिल्कुल छुई-मुई से होते हैं, किसी मुसीबत की सुगबुगाहट भी मिल जाए, तो पसीने से पस्त हो जाते हैं।

पर यहां तो बहुत ही भयानक मंजर था, एक पूरा हवाई जहाज हिंद महासागर के हवाले हो गया था। न जाने क्या हुआ, मशीन में क्या खराब आई? आधी रात में सब सो रहे थे और जहाज सैकड़ों किलोमीटर ऊपर नाकाम हो चुका था। पता नहीं, कितनों की नींद खुली, पर जब इस 12 वर्षीय लड़की की आंख खुली, तो वह बीच समुद्र में लहरों के बीच गोते खा रही थी। ज्वार का ऐसा जोर था कि लपेटे में आने से बचना मुश्किल था। मुसीबत यह भी कि उसे तैरना नहीं आता था। जब दिमाग को कुछ सूझ नहीं रहा था, तब हाथ को एक ऐसी चीज नसीब हुई, जो शायद हवाई जहाज से ही टूटकर जुदा हुई थी। लड़की ने दोनों हाथों से उसे थाम लिया। खूब खारा पानी और पेट्रोलियम की तेज गंध थी। लड़की को कहां पता था कि यह उसी विमान का टुकड़ा है, जिसमें बैठकर वह फ्रांस से कोमोरोस जा रही थी। गर्मियों की छुट्टियों को शानदार अंदाज में जीने का इरादा था, पर विमान में तो मां भी थीं! अब मां कहां है? शायद मां विमान से कोमोरोस पहुंच गई होगी। वहां पहुंचकर वह बहुत नाराज हो रही होगी।

आधी रात के अंधेरे में अकेले तिनका के सहारे तैरती उस लड़की का पूरा दिमाग मां की नाराजगी पर जा टिका। मां तो यही सोच रही होगी कि लापरवाह लड़की ने विमान में सीट बेल्ट तक नहीं बांधा था, बेल्ट खोलकर आराम फरमा रही थी, तभी तो एक झटका लगा और खिड़की से बाहर समुद्र में जा गिरी। वह चिंता में पड़ गई कि अब मां को क्या जवाब दूंगी? मां बहुत फटकारेगी, हो सकता है, एकाध थप्पड़ भी जड़ दे। अब तो छुट्टियां भी खराब हो गईं, इसका भी मां को गुस्सा होगा।

मां का भय सागर के एकांत में भी काम कर रहा था। घना अंधेरा था, कभी-कभी कोई सितारा चमक उठता था। वह कभी सिर उठाकर देखती थी, तो हर तरफ पानी ही पानी था, पता नहीं कहां तक पानी होगा, पर मां जब नाराज होगी, तो कुछ नहीं सुनेगी। मां ने विमान में चढ़ने से पहले समझाया भी था, पर पता नहीं क्या हुआ, एक झटका लगा और ऐसा हो गया?

कहा जाता है कि मुसीबत हर जिंदगी में आती है, पर जो लोग मुसीबत से परे भी कुछ सोच पाते हैं, वे ज्यादा आसानी से बच निकलते हैं। उस लड़की के साथ यही हुआ। आधी रात के बाद सुबह हुई, उम्मीद का कुछ उजाला हुआ, धूप खिली, पर तब भी हर तरफ लहरों का तांडव था। सागर में तिनका सहारे नौ घंटे से ज्यादा समय बीत चुका था, तभी किसी देवदूत की तरह एक नाव नजर आई। लड़की को इतनी खुशी हुई कि उसने हाथ ऊपर कर दिए और जिसके सहारे वह बिना प्रयास तैर रही थी, वह तिनका भी छूट गया। तभी एक ऊंचा ज्वार आया और वह बचावकर्मियों की नजर से ओझल हो गई। ज्वार जब गुजरा, तब वह फिर नजर आई। इस बार उसे देखते ही एक साहसी बचावकर्मी ने छलांग लगा दी और कुछ ही पल में उसे नाव पर बचा लाया। नाम-गांव पूछा गया, पर वह नाव से अस्पताल तक बार-बार बस यही पूछती रही कि मम्मी कहां है?

बहरहाल, दूसरे दिन दुनिया के तमाम अखबारों में खबर थी, यमनिया एयरलाइन का जेट मंगलवार, 30 जून, 2009 तड़के समुद्र में गिर गया, उसमें सवार 152 लोगों की मौत हो गई, पर कुदरत का कमाल देखिए कि बस एक फ्रांसीसी बच्ची बच गई है। चमत्कारी बच्ची बाहिया बाकरी का अस्पताल में इलाज चल रहा है। कंधे की हड्डी टूट गई है, घुटने पर ज्यादा चोट है और शरीर व चेहरे पर खरोंच हैं। बाहिया के पिता को बुलाया गया, तो पिता से भी उसने यही सवाल पूछा कि मम्मी कहां है?

खैर, दो-तीन दिन बाद ही उसे बताया गया कि विमान हादसा हुआ है, तुम्हारे सिवा और कोई नहीं बचा है। उससे मिलने फ्रांस के राष्ट्रपति भी आए। पूरी दुनिया को संदेश मिला कि बेहिसाब मुसीबत में भी हिम्मत नहीं हारा करते। भले कहर टूटे, पर जिंदगी की जंग जारी रहनी चाहिए। जिस दौर में मामूली जलभराव भी जानलेवा हो जाता है, उस दौर में बाहिया एक जीवंत मिसाल हैं। उनकी किताब *आई एम बाहिया : द मिरेकल गर्ल* जब आई, तब ख्यात फिल्म निर्देशक स्टीवन स्पीलबर्ग ने संपर्क किया। बाहिया ने यह कहते हुए मना कर दिया कि उस भयानक मंजर को याद करना और फिल्माना बेहद डरावना होगा, तो अच्छा है कि उन लम्हों को लफ्जों में ही रहने दिया जाए।

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

जहां रस ही नहीं, वहां रसिक कहां

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

अब न कोई सुनता है और न सुनना चाहता है, सब कहना-बोलना चाहते हैं। आज बोलने वाले अधिक हैं और श्रोता कम। कवि हो या वक्ता, सबकी परेशानी यही है कि अब न कोई किसी की कविता सुनता है, न किसी वक्ता को सुनने का धैर्य रखता है, सब बस अपनी सुनाना चाहते हैं और इस चक्कर में यह भूल जाते हैं कि जब आप किसी की नहीं सुनते, तो कोई आपकी क्यों सुने? जब आप ही के पास सुनने का वक्त नहीं, धीरज नहीं, तो दूसरे के पास भी नहीं। यह इन दिनों का नया 'आकाशभाषित' है।

कुछ समय पहले तक हर शहर में साहित्य के श्रोता, साहित्य रसिक, यानी साहित्यानुरागी हुआ करते थे, पर अब न वैसे श्रोता बचे हैं, न रसिक बचे हैं और न साहित्यानुरागी ही बचे हैं। आह! वे दृश्य अब लगभग खत्म हो चले हैं, जब हिंदी साहित्य के किसी विद्वान वक्ता को सुनने हुजूम पहुंचता था, हर हिंदी वाला पहुंचता था!

दिल्ली में ही किसी दिन जैनेंद्र बोलते होते, तो उनको सुनने वाले साहित्य रसिक पहुंचते, किसी दिन हजारी प्रसाद द्विवेदी बोलते होते, तो उनको सुनने वाले साहित्यानुरागी पहुंचते और अज्ञेय को सुनने उनके चाहने वाले पहुंचते थे। यही हाल रामविलास शर्मा को सुनने वालों का था। श्रोता नामवर सिंह को सुनने भी पहुंचा करते थे। ऐसा ही एक दौर वह भी रहा, जब दिनकर, बच्चन, शिवमंगल सिंह सुमन और नीरज काव्य रसिकों के 'हीरो' हुआ करते थे।

एक साहित्यिक मित्र का कहना था, वह इनमें से किसी को भी सुनने के लिए दूर तक जा सकते हैं और उनके लिए किसी से भी भिड़ सकते हैं। ऐसा था कभी हिंदी साहित्य का जलवा! तब साहित्य को 'पॉपुलर' बनाने वाले ऐसे बहुत से कवि-लेखक रहे। कई कवियों की कविता अपने रसिक खुद बनाती थी। वे अपनी कविताओं से, वक्तव्यों से हिंदी वालों को साहित्य में संस्कारित करते थे। हिंदी साहित्य का ऐसा चस्का था कि हर रसिक को अपने प्रिय कवि की दो-चार कविताएं कंठस्थ होतीं। ऐसे लोग स्वयं साहित्य करें या न करें, लेकिन साहित्य का आनंद अवश्य लेते।

वह हिंदी साहित्य का अपना 'पॉपुलिस्ट' दौर था, जब साहित्य जनता के आनंद का, रुचि का विषय बना। उदाहरण के लिए, एक दिन जब कवि राजकमल चौधरी की मृत्यु की खबर हाथरस जैसे शहर में पहुंची, तो पता नहीं क्यों, हमें महसूस हुआ कि कोई अपनी ही बिरादरी का आदमी चला गया है। न तब हम उनको जानते थे, न एक 'बड़े अकवि' के रूप में पहचानते थे, पर खबर मिली, तो लगा कि हिंदी साहित्य का कोई सगा-सहोदरा सिधारा है!

तब हिंदी में एमए करने वाले हमारे जैसे मामूली विद्यार्थी के लिए हिंदी साहित्य एक जादू की तरह था। हम उसे अपनी पूंजी, अपनी ताकत, अपना माल समझते। उस पर हम अपना एकाधिकार समझते। हिंदी साहित्य पर हमें गर्व होता। हम कवियों की दुनिया में हैं, ऐसा महसूस करके इतरा भी सकते थे। ऐसा करके हम अपने को सामान्य आदमी से कुछ विशिष्ट समझते।

ऐसा साहित्यानुराग आज संभवतः बिहार में कहीं बचा हो, तो बचा हो, बाकी कहीं नहीं बचा दिखता। दिल्ली में तो एकदम नहीं। अब हिंदी छात्र का दिल साहित्य में नहीं लगता। कलम-कॉपी की जगह उसके पास मोबाइल, लेपटॉप है, कान में ईयरफोन हैं। टीचर क्या बोलता है, क्या समझाता है, उसे परवाह नहीं। इम्तिहान आएं, तो गूगल है, कुंजियां हैं, गेस पेपर्स हैं और 'पेपर लीक कल्चर' है। जब साहित्य में ही रस नहीं, तो कोई कैसे रसिक बने?

लेखक-कवि की जगह अब हमें ब्लॉगर, पोस्ट राइटर, ट्वीट लेखक, इंस्टाग्रामर और यू-ट्यूबर मिलते हैं। रसिक तो छोड़िए, अब साहित्य का सहृदय तक नहीं मिलता, जो कुछ देर के लिए साहित्य-चर्चा करे, किसी कवि की लाइन को बोले, उसे खुलकर सराह सके। ऐसा सहृदय है, तो साहित्य है; ऐसा रसिक है, तो साहित्य है, वरना सिर्फ साहित्यकारों से साहित्य नहीं बनता!

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

बेकाबू वाहन पलटने से दो श्रमिकों की मौत, छह घायल

महराजगंज। (भाषा) उत्तर प्रदेश में महराजगंज जिले के पनियरा क्षेत्र में एक पिकअप वाहन के अनियंत्रित होकर पलट जाने से उस पर सवार दो श्रमिकों की मौत हो गई तथा छह अन्य घायल हो गए। पुलिस सूत्रों ने शनिवार को बताया कि काम करने सिद्धार्थनगर जा रहे मजदूरों से भरा एक पिकअप वाहन पनियरा के बभनौली जंगल गांव के पास शुक्रवार की रात अनियंत्रित होकर पलट गया। उन्होंने बताया कि इस दुर्घटना में देवरिया निवासी रियासत अली (45) और पीयूष यादव (22) की मौत हो गई। सूत्रों ने बताया कि हादसे में छह अन्य लोग घायल हो गए और उन्हें गोरखपुर स्थित बाबा राघव दास मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

छात्र के हत्यारे को आजीवन कारावास

बलिया। बलिया की एक अदालत ने एक छात्र की हत्या के मामले में शनिवार को एक आरोपी को दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई। अभियोजन पक्ष के अनुसार जिले में खेजुरी थाना क्षेत्र के करम्बर गांव में 30 अगस्त 2023 की रात टाउन डिग्री कॉलेज के बीकॉम द्वितीय वर्ष के 19 वर्षीय छात्र बादल पटेल की चाकू घोंपकर हत्या कर दी गई थी। घटना के समय पटेल अपने घर के बाहर सो रहा था। इस मामले में बादल के चाचा पप्पू पटेल की तहरीर पर मुकदमा दर्ज किया गया था। पुलिस ने मामले की जांच के बाद आरोपी विशाल राजभर और एक नाबालिग लड़के के विरुद्ध न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया था। नाबालिग का मामला किशोर न्यायालय में विचाराधीन है। पुलिस अधीक्षक देव रंजन वर्मा ने बताया कि न्यायाधीश महेश चंद्र वर्मा की अदालत ने विशाल को दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई।

जिला जज-डीएम ने जिला कारागार का दौरा कर लिया व्यवस्थाओं का जायजा

चित्रकूट। जिला जज विकास कुमार प्रथम, जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जी0एन0, पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह, सीजीएम राजेंद्र प्रसाद भारती, सचिव/ अपर जिला जज विधिक सेवा प्राधिकरण नीलू मेनवाल ने संयुक्त रूप से शनिवार को जिला कारागार का त्रैमासिक निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

उन्होंने महिला बैरक में निरुद्ध महिला कैदियों, चिकित्सालय एवं पाकशाला (रसोई घर) हाई सिक्योरिटी, बैरक नंबर दो का निरीक्षण किये। जिला जज व जिलाधिकारी ने महिला बैरक का निरीक्षण के दौरान निरुद्ध महिला कैदियों से खानपान व समस्याओं के बारे में जानकारी लिए एवं बैरक में महिलाओं को कराएं जा रहे पठन-पाठन को देखा एवं कुछ महिलाओं द्वारा बैरक में लगे स्मार्ट बोर्ड पर नाम भी लिखवाया गया।

अयोध्या में राम पथ के निर्माण, सीवर लाइन बिछाने में लापरवाही

छह अधिकारी निलंबित

भाषा। अयोध्या। उत्तर प्रदेश सरकार ने अयोध्या में 14 किलोमीटर लंबे राम पथ के निर्माण और सीवर लाइन बिछाने में घोर लापरवाही बरतने के आरोप में लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) तथा उत्तर प्रदेश जल निगम के छह अधिकारियों को निलंबित कर दिया है। पिछले शनिवार और मंगलवार रात हुई बारिश में यहां राम पथ के किनारे स्थित करीब 15 गलियां और सड़कें जलमग्न हो गई थीं। राम पथ के किनारे स्थित घरों में न सिर्फ बारिश का पानी घुस गया, बल्कि नवनिर्मित राम पथ एक दर्जन से अधिक स्थानों पर धंस गया। राज्य सरकार ने इस मामले में अहमदाबाद स्थित कंपनी भुवन इंफ्राकॉम प्राइवेट लिमिटेड को भी नोटिस जारी किया है। विशेष सचिव विनोद कुमार ने शुक्रवार को पीडब्ल्यूडी के अधिशासी अभियंता ध्रुव अग्रवाल और सहायक अभियंता अनुज देशवाल को निलंबित करने के आदेश जारी किए। वहीं, कनिष्ठ अभियंता प्रभात कुमार पांडेय को निलंबित करने का आदेश पीडब्ल्यूडी के मुख्य अभियंता (विकास) वी के श्रीवास्तव ने जारी किया। उत्तर प्रदेश जल निगम के प्रबंध निदेशक राकेश कुमार मिश्रा ने अयोध्या में पदस्थ अधिशासी अभियंता आनंद कुमार दुबे, सहायक अभियंता राजेंद्र कुमार यादव और अवर अभियंता मोहम्मद शाहिद को निलंबित करने के आदेश जारी किए हैं। पीडब्ल्यूडी की ओर से जारी एक कार्यालय आदेश में कहा गया है कि राम पथ की सबसे ऊपरी परत निर्मित किए जाने के तुरंत बाद क्षतिग्रस्त हो गई। इससे राज्य सरकार की शीर्ष प्राथमिकता के तहत किए जा रहे कार्यों में शिथिलता सामने आई और आम लोगों के बीच राज्य की छवि को नुकसान पहुंचा है। कार्यालय आदेश में कहा गया, "इसे गंभीर अनियमितता मानते हुए निर्माण खंड-तृतीय के अधिशासी अभियंता ध्रुव अग्रवाल को उत्तर प्रदेश सरकारी सेवक (अनुशासन एवं अपील) नियमावली 1999 के नियम सात के तहत निलंबित किया जाता है। वह अयोध्या में मुख्य अभियंता, पीडब्ल्यूडी के कार्यालय से संबद्ध रहेंगे" प्रमुख सचिव, पीडब्ल्यूडी, अजय चौहान ने कहा कि मामले की जांच की जा रही है।

यूपी में शिवसेना का होगा विस्तार

डा. श्रीकांत शिंदे के तीसरी बार सांसद बनने पर हुआ अभिनंदन

प्रयागराज। शिवसेना की प्रदेश कार्यकारिणी ने नई दिल्ली में केन्द्रीय राज्य मंत्री आयुष स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण प्रकाश राव जाधव से भेंट कर उन्हें तीसरी बार जीत की बधाई देकर उनके साथ संगठनात्मक बैठक की। इस दौरान उप्र संगठन की तरफसे उप्र आगमन के लिए भी आमंत्रित भी किया गया। शिवसेना की युवा सेना के राष्ट्रीय प्रमुख युवाओं की शान महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के सुपुत्र डा श्रीकांत शिंदे को तीसरी बार सांसद बनने पर स्वागत और अभिनंदन किया गया। सांसद डा श्रीकांत शिंदे ने संगठन के विस्तार संबधी आगामी तैयारियो पर गंभीरतापूर्वक मार्गदर्शन एवं दिशा निर्देश भी दिए। शिवसेना के प्रदेश संगठन मंत्री अरविन्द ने बताया कि उप्र संगठन को प्रदेश के साथ साथ मेरठ प्रांत बृज प्रांत कानपुर बुन्देलखण्ड प्रांत अवध प्रांत गोरखपुर प्रांत और काशी प्रांत का भी गठन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सभी प्रांत के अन्तर्गत आने वाले मंडल और जिलो की कार्यकारिणी का गठन दिसंबर 2024 तक कर लिया जायेगा। शिवसेना की उप्र प्रदेश सचिव रुचि अभिषेक तिवारी ने आगामी प्रयागराज महाकुंभ पर शिवसेना के शिविर के लिए प्रस्ताव रखा गया। जिस पर सभी ने सहमति भी दी। प्रदेश संगठन की तरफ से प्रदेश प्रमुख अभय संगठन मंत्री अरविन्द प्रदेश महासचिव लल्लन सह संगठन मंत्री प्रमोद प्रदेश सचिव रुचि अभिषेक तिवारी एवं अन्य प्रमुख पदाधिकारी भी साथ रहे। इस दौरान तय किया गया कि 2024 तक उप्र के सभी जिलों और तहसील में संगठन विस्तार का लक्ष्य रखा गया है। प्रदेश संगठन द्वारा यह आश्वासन भी दिया गया कि आगामी चुनाव में अब शिव सेना मजबूती से चुनाव लडेगी। बैठक में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को महाकुंभ प्रयागराज के शुभारंभ के लिए भी प्रदेश संगठन द्वारा आमंत्रित किया गया है। जिसमें देश भर के सभी 13 अखाड़ों के संत महात्माओं द्वारा शिवसेना के मेला शिविर की स्थापना पूजा आदि कराने की रूपरेखा तय हुई ताकि सुदूर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रो एवं दूर दूर से अन्य प्रदेश से आने वाले श्रद्धालु रुक सकेंगे। सनातन धर्म की रक्षा के लिए सबसे आगे खडी रहने वाली शिवसेना अब पार्टी संस्थापक बाला साहब की अपनी हिन्दुत्ववादी नीतियों के साथ देश भर में संगठन का विस्तार कर रही है ताकि राष्ट्रीय दल के तौर पर अब पहचान बन सकें। वर्तमान में एनडीए के तीसरे बड़े घटक दल और भाजपा के साथ महाराष्ट्र सरकार का नेतृत्व शिवसेना के मुखिया एकनाथ शिंदे कर रहे हैं। उन्हीं के नेतृत्व में भाजपा अक्टूबर में होने वाले महाराष्ट्र विधानसभा का चुनाव पूरी तैयारी से लड़ेगी।

मुविवि की बीएड प्रवेश परीक्षा में 71 फीसद अभ्यर्थी हुए शामिल

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज की सत्र 2024 25 की बीएड एवं बीएड स्पेशल एजुकेशन की प्रवेश परीक्षा शनिवार को प्रदेश के दस जिलों के तेरह परीक्षा केंद्रों पर शांतिपूर्ण ढंग से आयोजित की गई। प्रवेश परीक्षा आयोजन एवं संचालन समिति के समन्वयक प्रो पी के स्टालिन ने बताया कि बीएड एवं बीएड विशिष्ट शिक्षा प्रवेश परीक्षा में 71 फीसद अभ्यर्थियों ने परीक्षा दी। बीएड प्रवेश परीक्षा में 4043 अभ्यर्थियों ने आवेदन किया था। जिनमें से 1182 अनुपस्थित रहे। जबकि बीएड विशिष्ट शिक्षा में देश भर से 2000 अभ्यर्थियों ने आवेदन किया था। जिनमें 569 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहे। प्रवेश परीक्षा सुबह दस से दोपहर एक बजे तक आयोजित की गई। प्रवेश परीक्षा के सफल संचालन के लिए कुलपति प्रो सत्यकाम के निर्देश पर सभी केंद्रों पर पर्यवेक्षकों एवं कोर कमेटी की तैनाती की गई थी। जिनकी देखरेख में सभी केंद्रों पर पारदर्शिता के साथ परीक्षा संपन्न कराई गई। प्रो स्टालिन ने बताया कि अभ्यर्थियों की सहूलियत का ध्यान रखते हुए प्रवेश परीक्षा प्रदेश के आगरा अयोध्या बरेली गोरखपुर झांसी कानपुर लखनऊ मेरठ वाराणसी एवं प्रयागराज में आयोजित की गई। प्रयागराज में राजकीय इंटर कॉलेज तथा विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर स्थित केंद्रीय पुस्तकालय में परीक्षा केंद्र पर अभ्यर्थियों ने परीक्षा दी। विश्वविद्यालय में स्थापित हेल्प डेस्क प्रदेश के सभी परीक्षा केंद्रों से निरंतर परीक्षा के सकुशल संचालन की जानकारी लेता रहा। समन्वयक प्रो स्टालिन ने बताया कि प्रवेश परीक्षा परिणाम शीघ्र ही घोषित किया जाएगा। यह जानकारीडॉ प्रभात चन्द्र मिश्र जनसम्पर्क अधिकारी ने दी।

संजय सिंह के खिलाफ महामारी अधिनियम उल्लंघन मामले की अगली सुनवाई छह जुलाई को

सुलतानपुर । आम आदमी पार्टी (आप) के नेता एवं राज्यसभा सदस्य संजय सिंह के खिलाफ सुलतानपुर में चुनाव आचार संहिता और महामारी अधिनियम से जुड़े मामले की सुनवाई अब छह जुलाई को होगी। संजय सिंह के अधिवक्ता मदन सिंह ने शनिवार को बताया कि उनके मुवक्किल राज्यसभा सत्र में हिस्सा लेने के कारण विशेष एमपी-एमएलए (सांसद-विधायक) अदालत में पेश नहीं हो सके। अदालत में उनकी हाजिरी माफी की अर्जी दी गई जिसके बाद मामले की सुनवाई की अगली तारीख छह जुलाई तय की गई है। उन्होंने बताया कि इस मामले में 20 जून को पिछली सुनवाई के दौरान अदालत ने संजय सिंह के खिलाफ जमानती वारंट जारी करते हुए सुनवाई के लिए 29 जून की तारीख तय की थी। विशेष लोक अभियोजक वैभव पाण्डेय ने बताया कि 13 अप्रैल 2021 को बंधुआकला थानाध्यक्ष प्रवीण कुमार सिंह ने मुकदमा दर्ज कराया था, जिसमें आरोप लगाया गया था कि संजय सिंह ने हसनपुर गांव में अपनी पार्टी की जिला पंचायत सदस्य सलमा बेगम के पक्ष में सभा की थी और कोविड-19 महामारी के दौर में आयोजित हुई इस सभा में 50-60 लोग शामिल हुए थे लेकिन इसके लिए प्रशासन से अनुमति नहीं ली गई थी। पाण्डेय ने बताया कि आरोप है कि इस जनसभा के आयोजन से महामारी अधिनियम और चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन हुआ है। पुलिस ने मामले में संजय सिंह सहित करीब दर्जन भर लोगों को आरोपी बनाया तथा अदालत में आरोप पत्र दाखिल किया था। विशेष लोक अभियोजक पाण्डेय ने बताया कि अन्य आरोपियों को जमानत मिल गई लेकिन संजय सिंह अदालत में उपस्थित नहीं हुए।

भामाशाह की जयंती को व्यापारी कल्याण दिवस के रूप में मना शासन ने बढाया व्यापारियों का सम्मान-सीडीओ

चित्रकूट। शासन के निर्देश पर देश के महान दानवीर भामाशाह का जन्मदिवस जिले में व्यापारी कल्याण दिवस के रूप में मनाया गया। मुख्य विकास अधिकारी अमृतपाल कौर ने दानवीर भामाशाह के चित्र पर माल्यार्पण व दीप जलाकर व्यापारी कल्याण दिवस की शुरूआत की।कार्यक्रम के दौरान जिले के पूंजी निवेशकों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। शनिवार को कलेक्टेऊट सभागार में सीडीओ अमृतपाल कौर ने दानवीर भामाशाह जयंती पर व्यापारियों को बधाई देते हुए व्यापारी कल्याण दिवस को संबोधित करते हुए कहा कि दानवीर भामाशाह ने मुगलों के खिलाफ हुई जंग में मेवाड़ नरेश महाराणा प्रताप का ऐतिहासिक सहयोग किया था। राणा प्रताप के लक्ष्य को सर्वोपरि मानते हुए भामाशाह ने अपनी पूरी संपत्ति अर्पित कर दी थी। जिससे महाराणा प्रताप ने सैन्य शक्ति संगठित कर मुगल शासकों को पराजित किया और मेवाड़ का राज्य प्राप्त किया था। सीडीओ ने बताया कि भामाशाह के जन्मदिवस को उत्तर प्रदेश सरकार ने 'व्यापारी कल्याण दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। वही उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष ओम केसरवानी और महामंत्री गुलाब गुप्ता ने देश के महान दानवीर भामाशाह के जन्मदिन को व्यापारी कल्याण दिवस के रूप में मानने के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आभार जताया है।

मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित कर विधायक-डीएम ने बढाया हौसला

चित्रकूट। सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश में मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया। इसी क्रम में मऊ-मानिकपुर विधायक अविनाश चंद्र द्विवेदी व जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन, सीडीओ श्रीमती अमृतपाल कौर, भाजपा जिलाध्यक्ष लवकुश चतुर्वेदी की मौजूदगी में मेघावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया। शनिवार को कलेक्टेऊट सभागार में जिले के हाईस्कूल व इंटर की छात्र-छात्राओं में प्रथम 21 छात्र-छात्राओं को टैबलेट, प्रशस्ति पत्र व डेमो चेक देकर सम्मानित किया। इंटर कॉलेज के शिवम चौरसिया को एक लाख डेमो चेक, टैबलेट, प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। अजय पांडे, काव्य रघुवंशी, पूजा देवी, अभिषेक कुमार, अभिषेक, धनपत सिंह, आकाश कुमार श्रीवास्तव, जननायक, आयुष शुक्ला आदि को 21 हजार का डेमो चेक, प्रशस्ति पत्र व टैबलेट दिया।

सुहासिनी संघ ने धूमधाम से मनाया ऋतुरंग वार्षिकोत्सव

सोनभद्र। एनटीपीसी विंध्याचल में संचालित सुहासिनी संघ ने अपना वार्षिक उत्सव कार्यक्रम 28 जून को सायं 07 बजे परियोजना के उमंग भवन धूमधाम से मनाया। इस कार्यक्रम का थीम ऋतु रंग था। ऋतुओं पर आधारित इस कार्यक्रम में शीतल बसंत, ग्रीष्मा, बरखा और हेमा नामक पात्रों के माध्यम से वर्षभर की ऋतुओं के त्योहारों को बारी बारी से प्रस्तुत किया गया। इन त्योहारों को नृत्य के माध्यम से दिखाया गया। इस मनोरम वार्षिकोत्सव में परियोजना प्रमुख विंध्याचल ई. सत्यफणी कुमार, मुख्यअतिथि के रूप पधारे तथा मुख्य महाप्रबंधक प्रचालन एवं अनुरक्षण समीर शर्मा मुख्य महाप्रबंधक चिकित्सा बी सी चतुर्वेदी एवं अन्य महाप्रबंधक भी उपस्थित रहे। सुहासिनी संघ की अध्यक्षा ई सरोजा फणी कुमार,उपाध्यक्षा सारिका चतुर्वेदी एवं महासचिव शिल्पा कोहली, एवं सदस्य अपने परिवारजनों सहित इस उत्सव में पधारे। इस उत्सव में छोटे छोटे गेम्स का भी आयोजन किया गया जिसका लोगों ने खूब लुफ्त उठाया। सुहासिनी संघ ने अपना वार्षिक रिपोर्ट भी प्रस्तुत किया। सुहासिनी संघ की अध्यक्षा ई सरोजा फणी कुमार के नेतृत्व में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया कार्यक्रम का संचालन महासचिव शिल्पा कोहली ने किया। इस अवसर पर कार्यकारी निदेशक विंध्याचल ई सत्य फणि कुमार ने अपने उद्बोधन में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए महिला क्लब के कार्यक्रम की सराहना की और सुहासिनी संघ को नित्य नए सामाजिक कार्यक्रमों हेतु प्रेरित किया।

मेधावी छात्र-छात्राओं को किया गया सम्मानित

कड़ी मेहनत से करें लक्ष्य की प्राप्ति

अंबेडकर नगर। माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा मेधावी छात्रों का सम्मान समारोह कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित किया गया। जिसके मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष श्याम सुंदर वर्माए जिलाधिकारी अविनाश सिंहए मुख्य विकास अधिकारी अनुराज जैनए अपर जिलाधिकारी डॉण् सदानंद गुप्ता मौके पर उपस्थित रहे। जिला पंचायत अध्यक्षए जिलाधिकारी तथा मुख्य विकास अधिकारी द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रारंभ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के अध्यक्षता में लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम का सीधा प्रसारण दिखाया गया।जिसमें मुख्यमंत्री द्वारा इंटरमीडिएट एवं हाई स्कूल के ऐसे छात्रों जिन्होंने प्रदेश में स्थान प्राप्त किया था उन्हें एक ?100000 का डेमो चेकए मेडल एवं प्रशस्ति पत्र दिया गया। मुख्यमंत्री द्वारा अपने उद्बोधन में कहा कि परिश्रम का कोई विकल्प नहीं हैए बच्चे कठिन परिश्रम से अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते हैं। इसके उपरांत एक लघु फिल्म के माध्यम से प्रदेश में शिक्षा के किए गए सुधारो को दिखाया गया। इसी के साथ एक टोल फ्री नंबर की शुरुआत की गई है जो कि 180088 93277 हैए इसके माध्यम से अभिभावकों से फीडबैक प्राप्त की जाएगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता बढ़ाने का प्रयास किया जाएगा। लखनऊ में आयोजित इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण कलेक्ट्रेट सभागार में दिखाया गया। जिससे यहां उपस्थित बच्चेए अभिभावकए शिक्षकए अधिकारी द्वारा ध्यान पूर्वक देखा गया।

इसके उपरांत जनपद स्तरीय कार्यक्रम में कुल 23 छात्रएछात्राओं को ?100000 तथा 6 छात्र.छात्राओं को ?21000 का डेमो चेक प्रदान किया गया।साथ ही साथ टैबलेट एप्रशस्ति पत्रए मेडल एवं माल्यार्पण कर सम्मानित किया गया तथा उनके मनोबल को बढ़ाया गया। अंबेडकर नगर के नमिता वर्मा व उत्कर्ष यादव को मुख्यमंत्री के द्वारा आयोजित लखनऊ के कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। तथा उन्हें ?100000 का डेमो चेकए टैबलेटएप्रशस्ति पत्र तथा मेडल प्रदान किया गया। जिला पंचायत अध्यक्ष द्वारा अपने संबोधन में बच्चों को शिक्षा के महत्व से अवगत कराया गया और उन्हें शुभकामनाएं प्रदान की गई। जिलाधिकारी द्वारा अपने उद्बोधन में बच्चों से समय के सदुपयोग करने के बारे में अवगत कराया गया। उन्होंने कहा कि आप अपने भाग्य के निर्माता स्वयं हैं अपने मेहनत के बल पर किसी भी क्षेत्र में सर्वोच्च पद तक जा सकते हैं इसी के साथ जनपद का नाम रोशन करने के लिए इन बच्चों को बधाई दी गई। बैठक के दौरान जिला विद्यालय निरीक्षकए जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी एजिला सूचना अधिकारी एविभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्यए शिक्षकए अभिभावक तथा छात्र.छात्राएं मौके पर उपस्थित हैं।

इतिहास खुद को दोहराता नहीं, लेकिन फिर भी इसमें रवानगी तो होती ही है।
- मार्क ट्वेन।

मूलत: 'नालंद' और प्रचलित 'नालंदा' की गौरव गाथा ऐसे ही अमिट नहीं बनी, उसके पीछे उसे विद्या का केंद्र बनाने की अद्भुत इच्छा शामिल थी। इतिहास लेखन के लिए प्राय: द्वितीयक स्रोतों का सहारा लेकर और प्राथमिक स्रोतों को अपने हिसाब से तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत करने से इतिहास और वर्तमान, दोनों के साथ अन्याय होता है।

फिर नालंद की ओर

इसकी चहारदीवारी के प्रधान द्वारों के सामने पंडितों की नियुक्ति की गई थी। उन्हें द्वार पंडित कहते थे। वे विविध विषयों के विशेषज्ञ थे। प्रवेश चाहने वाले विद्यार्थियों की योग्यता तथा प्रतिभा की परीक्षा लेने के लिए वे कड़े प्रश्न पूछते थे। समुचित उत्तर देने के बाद ही उन्हें विश्वविद्यालय में प्रवेश की आज्ञा मिलती थी।

डॉ. ज्ञानेंद्र नारायण राय
शताब्दी फेलो, भारत अध्ययन केंद्र, बीएचयू

नालंद के विद्या केंद्र को देखते हुए इसे विश्वविद्यालय नगर की संज्ञा प्रदान करें, तो संभवतः इसमें कोई अत्युक्ति नहीं होगी। ह्वेनसांग के विवरण में इसके नाम की व्युत्पत्ति के विषय में एक उल्लेख मिलता है, जो बौद्ध परंपराओं पर आधारित है। इसके अनुसार, गौतम बुद्ध अपने एक पूर्व जन्म में इस क्षेत्र के सम्राट थे। उनकी ख्याति चतुर्दिक अथक दानी (न-अलम-दा, अर्थात दान देने से न संतुष्ट होने वाले) के रूप में थी। इस कारण यह स्थान नालंद के नाम से प्रख्यात हुआ। मज्झिम निकाय (1.377) के अनुसार, यह राजगृह के पास एक छोटा-सा ग्राम था। जैन ग्रंथों में यह राजगृह के सीमांत क्षेत्र के रूप में वर्णित है। यहां पर महावीर ने 14 वर्ष व्यतीत किए थे। अशोक के काल के पूर्व यहां पर सारिपुत्र की स्मृति में एक स्तूप बनवाया गया था।

फाह्यान के समय तक विद्या के केंद्र के रूप में नालंद की कोई ख्याति नहीं थी। फाह्यान के लगभग तीन शताब्दियों के बाद जब ह्वेनसांग नालंद आया, उस समय यहां पर एक अंतरराष्ट्रीय ख्याति का विद्या केंद्र था। ह्वेन सांग के अनुसार, इस विद्या केंद्र की स्थापना शक्रादित्य नामक नरेश द्वारा की गई थी। 'शक्र' शब्द इंद्र का पर्याय है तथा मुद्रा साक्ष्य के अनुसार महेंद्रादित्य कुमारगुप्त प्रथम से उसका एका संभाव्य है। इस आधार पर नालंद विश्वविद्यालय की स्थापना कुमारगुप्त प्रथम द्वारा किया जाना स्थापित होता है। शक्रादित्य के बाद बुद्धगुप्त, तथागतगुप्त, बालादित्य वज्र तथा हर्षादि ने नालंद में भवन आदि का निर्माण करवाया तथा विद्या केंद्र को आर्थिक सहायता भी प्रदान की। हर्ष ने यहां पर पीतल का एक विहार तथा उसके चारों ओर एक दीवार बनवाने के साथ ही एक संघाराम का भी निर्माण किया, जिसमें 40 भिक्षुओं के भोजन की व्यवस्था की गई थी। ह्वेनसांग लिखता है कि उसके आगमन पर शक्रादित्य द्वारा निर्मित विहार जीर्णावस्था को प्राप्त हो चुका था। लेकिन नालंद महाविहार के संरक्षण और संवर्धन से जुड़े हमें कई ताम्रलेख प्राप्त हैं, जिनमें से कुछ का प्रकाशन हीरानंद आदि विद्वानों ने *एपीग्राफिया इंडिका* के वॉल्यूम 20 और 21 में *नालंद ऐंड इट्स एपीग्रैफिक मैटेरियल्स* शीर्षक से प्रकाशित किया है। उनमें से एक के अनुसार, वहां कई विहार एक ही पंक्ति में थे, जिनके शिखर गगनचुंबी थे।

यस्याम्बुधरावलेहिशिखरश्रेणी विहारावली।
मालेवोधर्वविराजिनी विरचिता धात्रा मनोज्ञा भुव:।।

इत्सिंग भी पुष्टि करता है कि वहां के भवन बादलों को छूते हुए से लगते थे। नालंद के विद्यार्थियों को निःशुल्क भोजन, वस्त्र के साथ शिक्षा दी जाती थी। ह्वेनसांग इस महाविहार को भारतीय राजाओं द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं की प्रशंसा करते हुए लिखता है कि इसे दो सौ गांव आर्थिक सहायता के लिए प्रदान किए गए थे। विश्वविद्यालय की अपनी निजी मुद्रा थी, जिस पर 'श्री नालंदा महाविहार-आर्य-भिक्षु-संघस्य' लेख उत्कीर्ण है। इस विश्वविद्यालय से देश-विदेश के कई अन्य विद्यालय भी संबद्ध थे और उनकी अलग-अलग मुद्राएं थीं।

हर्ष के बाद भी कतिपय भारतीय नरेशों ने इस विद्या केंद्र को आर्थिक सहायता प्रदान की थी। यशोवर्मदेव नाम के सम्राट के एक मंत्री ने नालंद को इतना अधिक दान दिया था, जिससे इसके भिक्षुओं को कई वर्षों तक प्रतिदिन भोजन दिया जा सकता था। बंगाल के पाल नरेशों ने भी नालंद के इस विद्या केंद्र में रुचि ली थी। देवपाल के एक शिलालेख में विदेशी राजा द्वारा अपने राजदूत के माध्यम से इस विश्वविद्यालय के लिए अनुदान का संदर्भ प्राप्त होता है। राजाओं के अनुदान तथा जनसहभागिता के साथ-साथ यह विश्वविद्यालय खेती एवं गो-पालन के द्वारा स्वयं भी अन्न तथा दूध का उत्पादन करता था।

इस विद्या केंद्र को लब्धप्रतिष्ठित विद्वान सुशोभित करते थे। ह्वेनसांग ने अपने समकालीन नालंद के आचार्यों का उल्लेख किया है। इस समय शीलभद्र इस केंद्र के कुलपति थे, जो इस चीनी यात्री के आचार्य रह चुके थे। ह्वेनसांग ने धर्मपाल नामक आचार्य का भी उल्लेख किया है, जो शीलभद्र के पहले नालंद के कुलपति रह चुके थे। उन्होंने आचार्य चंद्रगोमिन के व्याकरण पर संस्कृत में 'वर्ण-सुत्र-वृत्ति-नाम' नामक एक व्याकरण टीका लिखी थी। ह्वेनसांग ने अन्य आचार्यों का भी उल्लेख किया है, जिनमें चंद्रपाल, गुणमति, स्थिरमति, प्रभामित्र, जिनमित्र तथा ज्ञानचंद्र प्रमुख हैं। शिक्षकों में शीलभद्र, नागार्जुन, आर्यदेव, असंग, वसुबंधु और दिङ्नाग जैसे विद्वान आचार्य भी थे। राधाकुमुद मुखर्जी लिखते हैं कि यहां अध्ययन के विषय के दृष्टिकोण से उदारता प्रकट होती है। ब्राह्मण धर्म एवं बौद्ध धर्म के ग्रंथ, धार्मिक और आमुष्मिक विषय, कला व विज्ञान, शिल्प व उद्योग की शिक्षा की व्यवस्था थी। हेतुविद्या (तर्क), शब्द विद्या (व्याकरण), चिकित्सा विद्या (भैषज्य), सांख्य, योग, न्याय और सर्वास्तिवाद, माध्यमिक आदि बौद्ध दर्शनों की शिक्षा का पूर्ण प्रबंध था।

ह्वेनसांग के वर्णन से लगता है कि इस विश्वविद्यालय में प्रवेश पाना दुष्कर था। इसके प्रधान द्वारों के सामने पंडितों की नियुक्ति की गई थी, जिन्हें द्वार पंडित कहा जाता था। वे विविध विषयों के विशेषज्ञ हुआ करते थे। प्रवेश चाहने वाले विद्यार्थियों की योग्यता की परीक्षा लेने के लिए वे दार्शनिक विषयों तथा जटिल समस्याओं पर कड़े प्रश्न पूछते थे। समुचित उत्तर देने के बाद ही उन्हें प्रवेश की आज्ञा मिलती थी। ह्वेनसांग लिखता है कि करीब बीस प्रतिशत विद्यार्थी ही बड़ी मुश्किल से सफल हो पाते थे। विदेशी छात्र बौद्ध ग्रंथों की प्रतिलिपियों को प्रस्तुत करने तथा ज्ञानोपार्जन में संलग्न रहते थे। अध्ययन के पश्चात ये विद्यार्थी स्वदेश जाकर नालंद की ख्याति को प्रसारित करते थे।

धूप आने दो

दुर्भाग्यवश इधर कुछ वर्षों से इस विद्या केंद्र के विध्वंस की घटना को ब्राह्मणों तथा बौद्धों के बीच संघर्ष के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाने लगा है। प्रो. डीएन झा के लेख 'प्राचीन बौद्ध स्थलों का विनाश' को साझा करते हुए कहा जा रहा है कि 'हिंदू कट्टरपंथियों द्वारा लगाई गई आग में नालंदा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था, फिर भी इसके विनाश का श्रेय मामलुक कमांडर बख्तियार खिलजी को दिया जाता है। हालांकि खिलजी ने पास के एक विहार को ध्वस्त किया था, लेकिन नालंदा नहीं गया था।' प्रोफेसर झा ने यह बात सबसे पहले 2006 में भारतीय इतिहास कांग्रेस के अधिवेशन में ब्राह्मण-बौद्ध संघर्ष की चर्चा करते हुए कही थी। प्रो. झा द्वारा जिन संदर्भों का सहारा लिया गया है, उनकी समीक्षा आवश्यक है। पहला संदर्भ उन्होंने सुंपा खान पोयेसे पाल जोर की पुस्तक *पैग सैम जॉन जांग* से लिया है, जो नालंद की विनाशकारी घटना के लगभग 500 वर्ष बाद 1704-88 के बीच लिखी गई थी। दूसरा वह लिखते हैं कि 'एक तिब्बती परंपरा में कहा गया है कि 11वीं शताब्दी में कलचुरी राजा कर्ण ने मगध में कई बौद्ध मंदिरों व मठों को नष्ट किया था', और *पैग सैम जॉन जांग* में कुछ 'हिंदू कट्टरपंथियों द्वारा नालंदा के पुस्तकालय को जलाने का उल्लेख है।'

विश्वविद्यालय की निजी मुद्रा

लेकिन सच्चाई यह है कि पहले संदर्भ के लिए प्रयुक्त अंश का प्रतिष्ठित बौद्ध विद्वान गेशे दोरजी दामदुल द्वारा अनुवाद किया गया। अनुवाद में कहा गया है कि 'नालंदा में राजा के एक मंत्री, काकुतसिता द्वारा एक मंदिर निर्माण के उत्सव के दौरान, कुछ शरारती नौसिखिए भिक्षुओं ने दो गैर-बौद्ध भिक्षुओं पर (बर्तन) धोने के पानी के छींटे डाले और दोनों को दरवाजे और दरवाजे की चौखट के बीच में दबा दिया। इससे क्रोधित होकर, एक (भिक्षु) जो उस भिक्षु का सेवक था, जिसने सूर्य की सिद्धि प्राप्त करने के लिए 12 साल तक एक गहरे गड्ढे में बैठकर तपस्या की थी। सिद्धि प्राप्त करने के बाद, उसने अग्नि पूजा (हवन) की राख को 84 बौद्ध मंदिरों पर फेंक दिया। वे सब जल गए। विशेष रूप से, शास्त्रों को आश्रय देने वाले नालंदा के तीन धर्मगंजों में भी आग लग गई, तब रत्नाधाती मंदिर की नौवीं मंजिल पर रखे *गुह्यसमाज* और *प्रज्ञापारमिता* ग्रंथों के ऊपर से पानी की धाराएं नीचे चलीं, जिससे कई शास्त्र बच गए... अपने आप हुए बलिदान के कारण उन दोनों भिक्षुओं की मौत हो गई।'

दरअसल, प्रोफेसर झा ने जिस घटना के लिए लगभग 500 वर्ष बाद लिखी हुई पुस्तक का संदर्भ लिया है, उसमें एक काल्पनिक कथा को आधार बनाया गया है। जबकि नालंद विनाश की घटना के समकालीन मौलाना मिन्हाज-उद-दीन की लिखी हुई पुस्तक *तबकात-ए-नासिरी* के वॉल्यूम-1 (अंग्रेजी अनुवाद) के पृष्ठ संख्या 552 पर स्पष्ट उल्लेख है कि मुहम्मद बख्तियार खिलजी 200 घुड़सवार सैनिकों के साथ नालंदा में पहुंचा, ब्राह्मणों के सिर मुंडवाकर उन्हें मार डाला और विद्या स्थान, जिसे हिंदवी भाषा में विहार कहते हैं, नष्ट किया। इतने स्पष्ट और समकालीन प्रमाण को अनदेखा करते हुए वह इस घटना को नालंद का मानने से ही इन्कार कर देते हैं और इसे ओदंतपुरी की घटना बताते हैं, जबकि बिहार में ओदंतपुरी की कोई स्पष्ट मार्किंग ही नहीं हो सकी है। आखिर कोई भी मार्क्सवादी-तर्कवादी इतिहासकार अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए सिद्धि प्राप्ति, राख से अग्निकांड, किताबों से पानी बहने, स्वतः आत्मदाह जैसे चमत्कारों पर कैसे भरोसा कर सकता है?

19-20वीं सदी से लेकर आज तक के इतिहासकार, जिन्होंने प्राथमिक स्रोतों एवं पुरातात्विक सामग्री के आधार पर इतिहास लेखन किया है, नालंद के संदर्भ में एकमत हैं कि इसके विनाश का मुख्य कारण मोहम्मद बख्तियार खिलजी ही है। विंसेंट ए. स्मिथ ने समकालीन दस्तावेजों के हवाले से लिखा है कि कैसे खिलजी ने नालंद को जलाकर नष्ट कर दिया था और वहां के सभी ब्राह्मणों को सिर मुंडवाकर मार डाला। यही बात डॉ. बीआर आंबेडकर, प्रसिद्ध इतिहासकार विल डुरंट तथा हार्टमुट शार्फे भी कहते हैं। इतिहास लेखन के लिए प्रायः द्वितीयक स्रोतों का सहारा लेकर और प्राथमिक स्रोतों को अपने हिसाब से तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत करने से इतिहास और वर्तमान, दोनों के साथ अन्याय होता है।

इतिहास को इतिहास की तरह लें

प्रधानमंत्री मोदी ने 19 जून को नवनिर्मित नालंदा विश्वविद्यालय के परिसर का उद्घाटन करते वक्त पुराने नालंदा विश्वविद्यालय की याद दिलाते हुए कहा, 'नालंदा इस सत्य का उद्घोष है कि आग की लपटों में पुस्तकें भले जल जाएं, लेकिन आग की लपटें ज्ञान को नहीं मिटा सकतीं।' इस भाषण पर इतिहास को लेकर ही बहस छिड़ गई।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि न केवल नालंदा, बल्कि बिहार और पश्चिम बंगाल स्थित कई विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों को मुस्लिम आक्रांताओं ने नष्ट किया था। कुछ इतिहासकार इसके उलट दावा करते हैं कि नालंदा को आग के हवाले हिंदुओं ने ही किया। हालांकि इन विचारों का कोई पुरातात्विक प्रमाण नहीं मिलता। एक प्रमुख इतिहासकार रोमिला थापर ने भी एक जगह तुर्कों के ही आक्रमण के बाद से नालंदा के विनाश की बात प्रकारांतर से कही है।

इस संबंध में डॉ. भीमराव आंबेडकर लिखते हैं (अंबेडकर समग्र भाग 3; पृ. 232-33)-'मुसलमान आक्रमणकारियों ने नालंदा, विक्रमशिला, जगद्दला, ओदंतपुरी आदि के बौद्ध विश्वविद्यालयों को नष्ट कर दिया। उन्होंने उन बौद्ध मठों को मटियामेट कर दिया, जिनसे देश भरा था। मुस्लिम आक्रमणकारियों की तलवार से बौद्ध पुरोहित वर्ग किस प्रकार नष्ट हो गया, यह स्वयं मुस्लिम इतिहासकारों ने दर्ज किया है।...यह इस्लामी आक्रमणकारियों द्वारा किया गया बौद्ध पुरोहितों का कत्लेआम था। जड़ पर ही कुल्हाड़ी मारी गई, क्योंकि पुरोहित वर्ग की हत्या करके इस्लाम ने बौद्ध धर्म की हत्या कर दी। यह भारत में बुद्ध के धर्म पर आई सबसे बड़ी आपदा थी।... बौद्ध धर्म की लौ जलाए रखने वाला कोई नहीं बचा।

विंसेंट स्मिथ कहते हैं (भारत का प्रारंभिक इतिहास (1924, पृष्ठ 419-420): 'बिहार के किले (नालंदा विश्वविद्यालय) पर केवल दो सौ घुड़सवारों के एक दल ने कब्जा कर लिया था। बौद्ध भिक्षुओं का कत्लेआम इतना पूर्ण था कि जब विजेता ने मठों के पुस्तकालयों में पुस्तकों की सामग्री को समझाने में सक्षम किसी व्यक्ति की तलाश की, तो एक भी जीवित व्यक्ति नहीं मिला, जो उन्हें पढ़ने में सक्षम हो। पुस्तकालय मे आग लगा दी गई।' जाहिर है, अब नालंदा के अतीत के नाम पर बेवजह वितंडा खड़ा करने की कोई जरूरत नहीं है।

-प्रो. मक्खन लाल, इतिहासकार

जानना जरूरी है
संस्कृति के पन्नों से

आशुतोष गर्ग
लेखक एवं अनुवादक

विश्वकर्मा ने कहा, दक्षिणी समुद्र के तट से लगभग एक सौ योजन की दूरी पर त्रिकूट नामक एक पर्वत है। उस शिखर पर मैंने देवराज इंद्र के लिए स्वर्ण नगरी का निर्माण किया था। आप चाहें, तो वहां रह सकते हैं।

राक्षसों को कैसे मिली सोने की लंका

सृष्टि की संरचना के समय ब्रह्मा ने जलचर प्राणी उत्पन्न किए और उनसे कहा, 'जल, सृष्टि का सबसे उपयोगी तत्व है। इसकी पूजा और रक्षा, दोनों आवश्यक हैं। इसकी रक्षा करने वाले प्राणी 'रक्ष' तथा जल का यक्षण (पूजन) करने वाले प्राणी 'यक्ष' कहलाएंगे।' इस तरह रक्ष (राक्षस) एवं यक्ष जातियां अस्तित्व में आईं।

राक्षस जाति में हेति और प्रहेति नाम के दो भाई हुए। कुछ समय बाद प्रहेति ने संन्यास ले लिया, तो राक्षसों के नेतृत्व का भार हेति पर आ गया। हेति ने काल की बहन, भया से विवाह किया। उनका एक पुत्र हुआ–विद्युत्केश। उसका विवाह संध्या की पुत्री सालकटंकटा से हुआ।

सालकटंकटा कामी स्वभाव की थी और सदैव पति के साथ रति-क्रीड़ा में मग्न रहती थी। सालकटंकटा जब गर्भवती हुई, तो उसे चिंता सताने लगी कि संतान होने के बाद वह विद्युत्केश के साथ प्रेमालाप कैसे करेगी। कुछ दिन बाद सालकटंकटा ने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसे देखकर विद्युत्केश तो प्रसन्न हुआ, किंतु सालकटंकटा को अपना ही पुत्र प्रेमालाप में बाधा लगने लगा। आखिर एक दिन उसने खीजकर कहा, 'मैं इसकी देखभाल नहीं कर सकती...मैं इसे त्याग रही हूं।'

विद्युत्केश ने पत्नी को बहुत समझाया, लेकिन वह नहीं मानी। आखिर, सालकटंकटा के कहने पर विद्युत्केश ने अपने नवजात पुत्र को एक पर्वत-शिखर पर मरने के लिए छोड़ दिया। वह बालक भूख-प्यास से बिलखता रहा। संयोग से, शिव और पार्वती कहीं जा रहे थे। उन्होंने शिशु के रोने का स्वर सुना, तो तुरंत उसके पास पहुंच गए। बालक को ऐसी करुण दशा में देखकर माता पार्वती का हृदय पसीज गया।

'प्रभु, यह बालक कौन है?' पार्वती ने महादेव से पूछा।

शिव ने पार्वती को बालक और उसके माता-पिता के विषय में बताया। पार्वती ने क्रोध में राक्षस जाति को शाप दे दिया : 'मेरा शाप है कि राक्षस कुल में शिशु जन्म लेते ही तत्काल वयस्क हो जाएंगे!'

- **शिव-पार्वती ने शिशु के पालन-पोषण का दायित्व अपने ऊपर ले लिया। पार्वती ने उसके सुंदर केश देखकर उसका नाम 'सुकेश' रख दिया।**

सुकेश, महादेव और पार्वती के संरक्षण में अत्यंत बलशाली और ज्ञानवान बन गया। एक दिन पार्वती और शिव ने सुकेश को बुलाया और कहा, 'पुत्र, तुम्हारे पिता विद्युत्केश के दुर्बल नेतृत्व में राक्षसों की प्रतिष्ठा कम हुई है। तुम अब बड़े हो गए हो। इसलिए राक्षसों का नेतृत्व करो और वंश के गौरव को पुनर्स्थापित करो।'

सुकेश ने तुरंत राक्षसों को संगठित करने का कार्य आरंभ कर दिया। उसके नेतृत्व में राक्षस फिर से साधन-संपन्न एवं शक्तिशाली हो गए और उनकी खोई हुई प्रतिष्ठा पुनर्स्थापित हो गई। फिर सुकेश ने देववती नाम की गंधर्व कन्या से विवाह किया। देववती से तीन पराक्रमी पुत्र हुए-माल्यवान, सुमाली और माली। तीनों बहुत बलवान थे।

- **तीनों भाई भयंकर तप करके ब्रह्मा से शक्तियां अर्जित कर अत्यंत शक्तिशाली हो गए। उन्होंने देवताओं तक पर नियंत्रण पा लिया।**

एक दिन तीनों भाई, देवशिल्पी विश्वकर्मा से बोले, 'हम राक्षसों के लिए एक भव्य नगरी का निर्माण कराना चाहते हैं, जो ऐसे स्थान पर हो, जहां कोई शत्रु न पहुंच सके।'

विश्वकर्मा ने विचार करके कहा, 'दक्षिणी समुद्र के तट से एक सौ योजन की दूरी पर त्रिकूट नामक एक पर्वत है। वह इतना ऊंचा है कि पक्षी भी उड़कर वहां तक नहीं पहुंच सकते। वह स्थान दुर्जेय है। मैंने उस शिखर पर देवराज इंद्र के लिए अद्भुत और विशाल स्वर्ण नगरी का निर्माण किया था। परंतु इंद्र को पसंद नहीं आई। इसलिए वह स्वर्ण नगरी वीरान पड़ी है। आप चाहें, तो वहां रह सकते हैं।'

'उस नगरी का क्या नाम है?' माल्यवान ने पूछा।

'लंका!' विश्वकर्मा ने उत्तर दिया।

इस तरह इंद्र के लिए बनाई गई लंका, राक्षसों की हो गई।

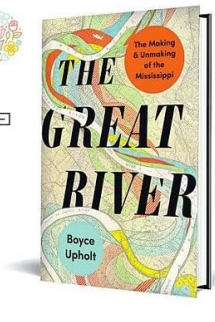

अध्ययन कक्ष

द ग्रेट रिवर
द मेकिंग ऐंड अनमेकिंग ऑफ द मिसिसिपी
लेखक-बॉयस उफोल्ट।
प्रकाशक- डब्ल्यू डब्ल्यू नॉर्टन ऐंड कंपनी।
मूल्य-29.99 डॉलर।

जब एक नदी बंधी

लेखक-पत्रकार बॉयस उफोल्ट गुस्सैल नदी मिसिसिपी की कहानी बताते हुए कहते हैं कि सदियों से इस नदी को बांधने की कोशिश हुई, फिर भी इसने अपनी आदत नहीं बदली।

अमेरिका और मिसिसिपी नदी का रिश्ता सहज नहीं रहा है। अपनी केंद्रीय भौगोलिक स्थिति और लंबाई के कारण ही यह एक महत्वपूर्ण शिपिंग रूट बनी। दूर तक फैली इसकी जलोढ़ मिट्टी को दुनिया के सबसे उर्वर प्रदेश के रूप में आंका जाता रहा है, लेकिन ऐसे असंख्य इलाके सालों-साल इसकी बाढ़ में डूबकर नष्ट हो जाने के लिए भी अभिशप्त रहे हैं।

मिसिसिपी की जलधाराएं आधे अमेरिका तक फैली हैं। इटास्का झील से अपनी यात्रा शुरू कर 2,350 मील दूर मेक्सिको की खाड़ी में गिरने तक यह नदी अमेरिका के 31 और कनाडा के दो राज्यों से होकर गुजरती है, और इस दौरान एक लाख से अधिक सहायक नदियां और मिसौरी तथा ओहियो जैसी बड़ी नदियां भी इसमें मिलती हैं। इसकी इन्हीं विशेषताओं के कारण उत्तर अमेरिका के आदिवासी समुदाय ने इसे 'मिसि-जीबी' नाम दिया, जिसका अर्थ है महान नदी।

सोलहवीं सदी में यूरोपीय सैलानियों ने इस विशाल नदी में सोने की खोज की, तो मार्क ट्वेन की पहल से इसके तट पर राष्ट्रीय साहित्य का सृजन हुआ। मिसिसिपी नदी के तट पर जैज और ब्लू जैसे संगीत की धुन बनी और गूंजी। लेखक-पत्रकार बॉयस उफोल्ट इस गुस्सैल नदी की कहानी बताते हैं कि सदियों से इस नदी को बांधने की कोशिश हुई, फिर भी मिसिसिपी ने अपनी आदत नहीं बदली।

हजारों वर्षों से मिसिसिपी की जलधाराएं अमेरिका के लाखों आदिवासी लोगों का आवास रही हैं, जो इस 'महान नदी' के क्रोध और बार-बार दिशा बदलने की इसकी आदत से अवगत होने के बावजूद इसे आदर देते हैं, क्योंकि इन लोगों ने मिसिसिपी की बाढ़ के अनुरूप अपना जीवन ढाल लिया है। आखिर मिसिसिपी सदियों से इन्हें जीवन और जीविका, दोनों देती रही थी। इसकी जलधाराओं और बाढ़ में आई मिट्टी ने अमेरिकी उद्यमियों के साथ-साथ इसके तट पर बस गए ब्रिटिशों तक को आकर्षित किया है। आखिर वे यूरोपीय इंजीनियर ही थे, जिन्होंने पहली बार इसे बांधने की कोशिश की। नतीजा यह हुआ कि वह दलदली जमीन गायब हो गई, जो पहले मिसिसिपी के उद्दाम बहाव पर अंकुश लगाती थी। बड़े बांध के निर्माण से बड़े पैमाने पर स्थानीय अमेरिकियों की खेती डूब गई। थॉमस जेफरसन के समय से आज के पर्यावरण सजग दौर तक मिसिसिपी नदी पर अधिकार जमाने, इसे बांधने और इसकी दिशा बदलने की कोशिशों ने इस नदी का स्वरूप ही बदल दिया है। उफोल्ट सिर्फ मिसिसिपी का इतिहास ही नहीं, बल्कि यह भी बताते हैं कि इस पर विजय पाने की कोशिश में किस तरह स्थानीय मूल निवासियों और गरीबों की अनदेखी हुई। शुरुआती दौर में मिसिसिपी के निचले इलाके में मलेरिया की मार ने कम पैसे वाले बागान मालिकों और बांध बनाने में लगे मजदूरों को वहां से बाहर कर दिया। ऐसे में, सिर्फ समृद्ध लोगों को मिसिसिपी से लाभ उठाने का मौका मिला। यानी मिसिसिपी को बांधने की कोशिशों का सिर्फ पर्यावरणीय नुकसान ही नहीं हुआ, इसने गरीब मूल निवासियों को भी विस्थापित कर दिया।

अभियान

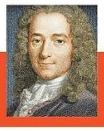

किसी व्यक्ति का मूल्यांकन उसके जवाबों से नहीं, बल्कि उसके सवालों से करना चाहिए।
-वोल्टेयर, महान दार्शनिक

amarujala.com
अमर उजाला

गोल चबूतरा

Hindi@mithelesh

■ मिथिलेश बारिया

हर साल बारिश में सड़क खराब हो जाती है,
इतने साल हो गए, न बारिश बदली
न सड़क...

जरा सरकर बैठो न,
मोहब्बत को भी तो जगह चाहिए...

ऐसे मिली परमाणु ऊर्जा की राह

आज के ही दिन सन 1905 में महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने जर्मनी की एक भौतिकी पत्रिका 'एनालेन डेर फिजिक' में चलती वस्तुओं के 'इलेक्ट्रोडायनामिक्स' को लेकर 'जूर इलेक्ट्रोडायनामिक बेवेग्टर कॉर्पर' शीर्षक से अपना एक शोध प्रकाशित कराया था। यह एक अद्भुत शोध था। आइंस्टीन ने 1902 से 1909 तक बर्न स्थित स्विस पेटेंट कार्यालय में तकनीकी विशेषज्ञ के रूप में भी काम किया था। वहां उनके दिमाग में जिन विचारों ने जन्म लिया, वे 1905 में एक के बाद एक लिखे गए पांच सैद्धांतिक शोध पत्रों में प्रकाशित हुए, जिन्होंने बीसवीं सदी के विज्ञान में क्रांति पैदा की। आइंस्टीन का पहला शोध पत्र 'फोटोइलेक्ट्रिक प्रभाव' पर था, जिसके लिए उन्हें 1921 में भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिला। दूसरे शोध पत्र में आणविक आकार का निर्धारण, तीसरे में ब्राउनियन गति की गणितीय व्याख्या प्रस्तुत की गई थी। आइंस्टीन के चौथे शोध पत्र को भौतिकी के क्षेत्र में प्रकाशित सबसे महत्वपूर्ण शोध माना जाता है, जिसमें सापेक्षता के सिद्धांत को प्रस्तुत किया गया। सापेक्षता के सिद्धांत की खोज के दूरगामी परिणाम सामने आए और इसने ही परमाणु ऊर्जा तथा परमाणु बम के निर्माण के लिए मंच तैयार किया।

■ सीतापुर से ज्ञान विवेक

झरोखा
30 जून

हर साल कुछ घंटों की बारिश में ही दिल्ली समेत कई महानगर पानी से भर जाते हैं और बाढ़ जैसे हालात बन जाते हैं। इस कुव्यवस्था के लिए शासन-प्रशासन जितने जिम्मेदार हैं, उससे कम जिम्मेदार एक आम नागरिक भी नहीं है।

हर साल इस बारिश का रोना

पहले से क्यों नहीं करते तैयारी?

दिल्ली-एनसीआर में भारी बारिश की वजह से सड़कों पर बाढ़ जैसे हालात बन गए। सड़कों पर 4 से 5 फीट पानी भरने से कारें डूब गईं। कई जगह नाव चलीं और कई इलाकों में ट्रैफिक जाम हो गया। बारिश की वजह से ही इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट के टर्मिनल-1 पर पिकअप-ड्रॉप एरिया की छत और सपोर्टिंग पिलर गिर गया। इसमें कई कारें दब गईं और जान-माल का नुकसान हुआ। पिछले साल हिमाचल प्रदेश और अन्य पहाड़ी राज्यों में बरसात ने बहुत कहर बरपाया था। दिल्ली में लाल किला, राजघाट जैसे वीआईपी इलाके बारिश के पानी में डूब गए थे।

चिट्ठी 1

अगर समय रहते बरसात से बचाव के लिए तैयारी कर ली जाए तो यह मौसम इतनी आफत न बरसाए। हाल ही में मौसम विभाग ने सामान्य बारिश होने की भविष्यवाणी की है, इसलिए केंद्र और राज्यों को मानसून से निपटने की तैयारी अभी से कर लेनी चाहिए, ताकि इस बार फिर से मानसून आफत न बने।

बरसात तो हर वर्ष आती है, लेकिन केंद्र और राज्य सरकारें इससे निपटने के लिए नाकाम ही दिखती हैं। एक या दो बारिश के बाद ही जगह-जगह पानी के तालाब बन जाते हैं। लोगों के घरों में बरसाती पानी घुस जाता है। गंदे पानी से बीमारियों के फैलने का खतरा भी बना रहता है, लेकिन सरकारें इसके प्रति भी गंभीर नजर नहीं आतीं। कुछ राज्य तो ऐसे भी हैं, जहां के बहुत से स्थानों की सीवरेज व्यवस्था सुचारू नहीं है। हर प्रदेश और केंद्र सरकार को चाहिए कि वह साफ-सफाई की उचित व्यवस्था कराए। लेकिन इसी के साथ हम नागरिकों की भी जिम्मेदारी बनती है कि इस बात का ध्यान रखें कि नालियां हमारी वजह से जाम न हों। नालियों में पॉलिथीन न फेंकें।

■ राजेश कुमार चौहान, जालंधर

अब मच्छर भी सोने नहीं देंगे !

आज भारत ही नहीं, बल्कि सारा विश्व मच्छर जनित रोगों पर नियंत्रण करने के लिए चिंचित है। विश्व स्तर पर बढ़ता मच्छरों का प्रकोप हर वर्ष लाखों लोगों की जान ले रहा है। भारत में गरमी और बरसात का यह संधिकाल मच्छरों के प्रजनन का समय है। इस समय मच्छर कूलर, पानी की टंकी, गड्ढों में जमा पानी और नाले आदि स्थानों पर अपने लार्वा को सुरक्षित रखने में सक्षम होते हैं। बस यहीं से मच्छरों का प्रकोप बढ़ता जाता है। मच्छर खुद को जीवित रखने के लिए मानव शरीर से रक्त चूसकर, फिर दूसरे-तीसरे मानव को काटकर कई तरह के संक्रमणों को जन्म देता है। ये मच्छर जीका, वेस्ट नाइल, चिकनगुनिया, डेंगू, मलेरिया, पीला बुखार, फाइलेरिया जैसी गंभीर बीमारियों के लिए जिम्मेदार हैं और पूरे विश्व में हाहाकार मचा रहे हैं।

चिट्ठी 2

जीव वैज्ञानिक मानते हैं कि मादा मच्छर ज्यादा खतरनाक होती हैं। मादा मच्छर का जीवन 42 से 56 दिन और नर मच्छर का जीवन 10 दिन का होता है। बरसात के दिनों में मच्छरों की संख्या को बढ़ने से रोकने के लिए हमें अपने घर से ही सार्थक कदम उठाने की आवश्यकता है। मच्छरों से बचाव करके ही बरसात में होने वाले रोगों को रोका जा सकता है। हालांकि जलवायु परिवर्तन के कारण मच्छरों के पनपने की संभावना रहती है। प्रशासन और सामाजिक संगठनों का सहयोग लेकर हम मच्छरों से निजात पा तो सकते हैं, लेकिन खुद की पहल ज्यादा जरूरी है।

■ अशोक वार्ष्णेय, इन्द्रानी

अफवाहों पर अंकुश जरूरी

सोशल मीडिया आज के समय में सामाजिक रूप में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। इस पर आप स्वयं को समाज से साझा करते हैं, लेकिन वहीं पर असामाजिक तत्व भी हैं, जो सोशल मीडिया का गलत उपयोग करते हैं। सोशल मीडिया पर अफवाहों का दौर हो या भ्रामक पहचान बनाकर भावनाओं को भड़काना, या फिर धार्मिक भावनाओं को आहत करना, इन सबमें सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का भरपूर उपयोग किया जाता है।

चिट्ठी 3

किसी एक पक्ष को लेकर बेहद संवेदनशीलता और आग्रह, अन्य के प्रति पूरी तरह संवेदनहीनता एवं दुराग्रह, पूर्वाग्रह से ग्रस्त या अपने जैसी विचारधारा के लोगों का गुट बनाकर किंगमेकर बनने का प्रयास, जिससे कुछ लोगों को चढ़ाया जा सके और कुछ को गिराया जा सके, फिर ऐसे गुटों के माध्यम से मास रिपोर्टिंग और ट्रोलिंग करना, यहां तक कि दंगे, उपद्रव कराने में भी सोशल मीडिया का अहम किरदार है, इस बात को नकारा नहीं जा सकता। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर 50 प्रतिशत बातें सत्य से कोसों दूर होती हैं। कई बार झूठी अफवाहें फैलाकर दंगे भड़काया जाते हैं। सरकार हो या पुलिस, पूरा नियंत्रण न होने के कारण कई सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स समाज में जहर घोलने का कार्य कर रहे हैं। इन सब मामलों पर सरकार की ठोस रणनीति के साथ ही कानूनन पुलिस साइबर सक्रियता हो, जो तुरंत सकारात्मक कार्रवाई करे और दंगे, उपद्रव, उन्माद होने से रोक सके, क्योंकि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स धीमे जहर का काम कर रहे हैं।

■ लक्ष्मण पुंडीर, श्रीनगर गढ़वाल

इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं

लखनऊ से निखिल रस्तोगी, सिरमौर से हेमराज राणा, लोएा से लक्ष्मी नारायण, बरेली से दिलीप कुमार गुप्ता, झांसी से डॉ. अतुल गोयल, अमरोहा से डॉ. महताब अमरोहवी, फिरोजाबाद से शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, अलीगढ़ से अनुपमा अग्रवाल, मिर्जापुर से सतिल पांडेय, बैतीताल से डॉ. प्रमोद अग्रवाल गोल्डी, नई दिल्ली से विजय किशोर तिवारी, रायपुर से संजीव ठाकुर।

हमें लिखें
abhiyan@amarujala.com

कुछ अलग

एक तरफ 'लूका' दूसरी तरफ 'इस्ला'

स्कॉटलैंड में लड़कों के लिए 'लूका' और लड़कियों के लिए 'इस्ला' नाम सबसे ज्यादा पसंद किए जा रहे हैं।

वैसे तो कहते हैं, नाम में क्या रखा है। लेकिन स्कॉटलैंड आकर देखें, यहां बच्चों के नाम पर 'घमासान' मचा हुआ है। नेशनल रिकॉर्ड्स ऑफ स्कॉटलैंड (एनआरएस) के नए आंकड़ों के अनुसार, 2023 में पहली बार स्कॉटलैंड में लड़कों के लिए 'लूका' सबसे पसंदीदा नाम रहा। वहीं लड़कियों के नामों में 'इस्ला' 2020 के बाद पहली बार शीर्ष स्थान पर रहा।

स्कॉटलैंड में पिछले साल बच्चों को रिकॉर्ड संख्या में नए नाम दिए गए, जिनमें बड़ी संख्या में बैंकसी, डेमन और जिहाद जैसे नाम शामिल रहे। लड़कों को दिए गए 2,362 अनोखे नामों में बॉय, डेमिगॉड, हॉवेल और शेडी भी शामिल थे। लड़कियों के लिए 2,983 अनोखे नामों में अलॉय, कॉस्टेली और पेस्टी शामिल थे।

रिसर्चर फिलिपा हैक्सटन के अनुसार, एनआरएस को स्कॉटलैंड में 2023 में रखे गए सभी नए नामों में एक अलग किस्म का नयापन देखा गया। वैसे भी पिछली पीढ़ियों की तुलना में लोग नए नामों का अधिक प्रयोग कर रहे हैं।

यही वजह रही कि लड़कों के लिए अलग-अलग नामों की संख्या 2023 में रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई। साथ ही वर्ष में केवल एक बच्चे को कई-कई नामों से पुकारने का चलन भी बढ़ा। लड़कियों के नामों के लिए भी यही पैटर्न देखा गया और उनके नामों में विविधता अब भी लड़कों की तुलना में अधिक पाई गई।

कुछ नाम जो तेजी से प्रचलन में आ रहे हैं, वे फिल्मों से जुड़े हुए हैं। 'लूका' जो अब स्कॉटलैंड में बच्चों के लिए सबसे लोकप्रिय नाम है, 2021 में इसी नाम की फिल्म की रिलीज के बाद लोगों की पसंद में आगे आता गया। इस बीच ब्लॉकबस्टर फिल्मों 'ओपेनहाइमर' और 'बार्बी' के किरदारों के नामों की लोकप्रियता में भी वृद्धि हुई। इनमें 'सिलियन' और 'मार्गोट' बहुत लोकप्रिय हुए। चर्चित नए नामों की सूची में 'ओकले' और 'मेबेल' भी लोगों की पसंद में अचानक शामिल हो गए।

■ ऋतु मिश्रा, चंडीगढ़

वैज्ञानिक की पाठशाला

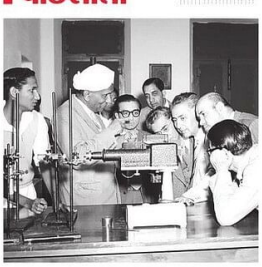

यह तस्वीर 1930 की है। इसमें भारतीय वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकटरमन अपने छात्रों को पढ़ा रहे हैं।

■ हिसार से देवीनंदन

ग्रामोफोन

साहिबा खुश होती रही और जमाना सुनता रहा

1993 में एक फिल्म आई थी- 'साहिबा'। इसके गीत लिख रहे थे आनंद बख्शी, जिनकी धुन बनाने की जिम्मेदारी मिली थी पंडित शिवकुमार शर्मा और पंडित हरिप्रसाद चौरसिया यानी शिव-हरि की जोड़ी को। फिल्म का एक शीर्षक गीत भी लिखा जाना था। इसके लिए आनंद बख्शी ने गीत लिखा- 'साहिबा मेरी साहिबा'। अब इसकी धुन बनने की बारी थी। शिव-हरि को 1953 में आई फिल्म 'आंसू' के गीत 'सुन मेरे साजना' की धुन बहुत अच्छी लगती थी। इस गीत की धुन पंजाबी शैली की अभिव्यक्ति थी, जिसे हुस्नलाल-भगतराम की जोड़ी ने उभारा था। काफी सोच-विचार और मंथन के बाद शिव-हरि ने 'साहिबा मेरी साहिबा' की धुन भी हुस्नलाल-भगतराम के गीत के नोट्स पर तैयार की। फिल्म का गीत-संगीत तो हिट हुआ ही, लेकिन यह शीर्षक गीत सुपरहिट हुआ। इस गीत को गाने के लिए शिव-हरि ने अनुराधा पौडवाल और जॉनी मुखर्जी की आवाजें लीं। परदे पर इसे माधुरी दीक्षित और ऋषि कपूर ने गाया।

■ मंजू सिंह, बरेली

जातिगत भेदभाव पर लोहिया

लोहिया इस बात को बखूबी समझते थे कि भारतीय समाज में 'जाति' एक महत्वपूर्ण कारक है। जो लोग इसे सैद्धांतिक रूप से नहीं मानते हैं, वे इसे व्यावहारिक तौर पर स्वीकार करते हैं।

ब्रिटिश शासन के अंतिम दशकों की बात करें तो भारत में समाजवादी और कम्युनिस्ट नेता उपनिवेशवाद विरोधी राजनीति में सक्रिय थे। उसके बाद आजादी के पहले के दशकों में ये दोनों गुट कांग्रेस पार्टी के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बने रहे। समाजवादियों और कम्युनिस्टों की शुरुआती पीढ़ियों में साहस और आदर्श के अलावा दूसरे कई गुण भी थे। फिर भी उनमें एक कमी थी- भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव के बारे में जागरूकता की कमी। लेकिन इस मामले में समाजवादी विचारक और राजनीतिज्ञ राम मनोहर लोहिया एक अपवाद थे।

जातिगत भेदभाव के ऊपर लोहिया ने जो लिखा, उसे प्रशंसकों ने इकट्ठा कर उनके जीवनकाल में ही एक किताब के रूप में हैदराबाद से प्रकाशित कराया था। हालांकि वह किताब लंबे समय से अब प्रिंट में नहीं है, लेकिन एक स्वतंत्र प्रकाशक ने उसका संशोधित संस्करण जरूर निकाला। संयोग की बात यह है कि वह प्रकाशन संस्थान भी हैदराबाद में ही स्थित था। लोहिया ने अपने वामपंथी साथियों के बारे में लिखा था कि वे ईमानदारी से, लेकिन गलत तरीके से यह सोचते हैं। वे मानते हैं कि सिर्फ आर्थिक असमानता को खत्म करने के परिणामस्वरूप जातिगत असमानता अपने आप खत्म हो जाएगी। उन्हें आर्थिक और जातिगत असमानता रूपी राक्षस को खत्म करना था, पर वे इसे समझ पाने में असफल रहे।

लोहिया इस बात को बखूबी समझते थे कि भारतीय समाज में 'जाति' एक महत्वपूर्ण कारक है। जो लोग इसे सैद्धांतिक रूप से नहीं मानते हैं, वे इसे व्यावहारिक तौर पर इसे स्वीकार करते हैं। उन्होंने लिखा कि भारत में 'जन्म, मृत्यु, विवाह, दावत जैसे अनेक अनुष्ठान' जातिगत ढांचे के अनुसार ही चलते हैं। इस व्यवस्था को यह सुनिश्चित करने के लिए लागू किया गया था कि "ऊंची जातियों के लोग राजनीतिक और आर्थिक, दोनों तरह से अपना शासन बनाए रखें। वे अकेले इस व्यवस्था को बंदूक के दम पर नहीं चला सकते थे, इसलिए उन्हें उन लोगों में हीनता की भावना को भरना था, जिन पर वे राज करना चाहते थे या जिनका शोषण करना चाहते थे।"

यद्यपि लोहिया दलितों के विरुद्ध भेदभाव को नजरअंदाज नहीं करते। उनका ध्यान उन सवर्ण या उच्च जातियों पर केंद्रित है, जहां से राजनीतिक, प्रशासनिक, पेशेवर, व्यावसायिक और बौद्धिक अभिजात्य वर्ग आते थे और छोटी जातियों का सत्ता और उच्च पदों पर बड़े पैमाने पर प्रतिनिधित्व नहीं था। 1958 में उन्होंने लिखा था कि सवर्ण, भारत की आबादी के पांचवें हिस्से से भी कम हैं। इसके बाद भी वे राष्ट्रीय गतिविधियों, व्यापार, सेना, सिविल सर्विस या फिर राजनीतिक पार्टियों में आसानी से आ जाते हैं। राष्ट्र की प्रगति के लिए इस असंतुलन को सही करना होगा। लोहिया चाहते थे कि उनके साथी समाज के निचले वर्गों, जैसे कि महिलाओं, पिछड़ों, हरिजन, मुस्लिम और आदिवासियों को ऊपर लाने के लिए संघर्ष करें, भले ही उनकी योग्यता आवश्यक रूप से कम हो। वे मानते थे कि सदियों पुराने इतिहास में जो कुछ हुआ, उसे अब खत्म किया जाना चाहिए।

समाजवादियों से लोहिया की अपेक्षा थी कि वे

रामचंद्र गुहा
जाने-माने इतिहासकार

अंतरजातीय, खासतौर से अलग-अलग वर्णों के बीच होने वाले विवाह को बढ़ावा दें। वे लिखते हैं, "अगर जाति के बंधन को तोड़ दिया जाए या उसमें थोड़ी ढील दी जाए तो उच्च जाति के बहुत से युवा पिछड़ी जातियों की महिलाओं की ओर आकर्षित होंगे और अपने साथ-साथ देश के लिए खुशियां लाएंगे। ठीक इसी तरह पिछड़ी जातियों के लड़के उच्च जातियों की महिलाओं की जिंदगी में प्रवेश कर सकेंगे।"

1960 में लोहिया ने जाति के अध्ययन और पिछड़ेपन को समझने के लिए संघ के गठन की बात कही थी। उन्होंने इस संघ के आठ मुख्य उद्देश्य बताए, जिनमें से दो के बारे में बताता हूं। पहला यह कि धर्म के साथ-साथ उसकी प्रथाओं को भी जाति दोष से मुक्त किया जाए, इस विश्वास के साथ कि अंतरजातीय विवाह करने से जातियां खत्म हो सकती हैं। दूसरा यह कि सरकारी पदों, राजनीतिक दलों, व्यापार और सशस्त्र सेवा में कानून या परंपरा के तौर पर 60 प्रतिशत पदों को पिछड़ी जाति, महिलाओं, हरिजन और आदिवासियों के लिए सुरक्षित करने की मांग की जाए।

पुस्तक के एक दिलचस्प हिस्से में 1955-56 में एक तरफ डॉ. लोहिया और उनके सहयोगियों तथा दूसरी तरफ डॉ. भीमराव आंबेडकर के बीच आदान-प्रदान किए गए पत्रों की एक शृंखला को पुनः प्रस्तुत किया गया है। यहां इन दोनों नेताओं और उनके अनुयायियों को एक-दूसरे के करीब लाने का प्रयास किया गया था, शायद इस उद्देश्य से कि उनकी दोनों पार्टियां 1957 के आम चुनावों में एक साझा मंच पर लड़ें। लोहिया और आंबेडकर के बीच जब पत्र-व्यवहार की शुरुआत हुई थी, लोहिया ने आंबेडकर से कहा था, "मैं चाहता हूं कि सहानुभूति के साथ गुस्सा भी जुड़ जाए और आप न सिर्फ पिछड़ी जातियों के, बल्कि भारतीय लोगों के भी नेता बनें।" आंबेडकर ने लोहिया के पत्र का जवाब देते हुए लिखा, "आप मुझसे 2 अक्तूबर को दिल्ली में आकर मिलें।" यह गांधी का जन्मदिन था और शायद यह महज एक संयोग था। दुर्भाग्य से लोहिया के घुमक्कड़ जीवन और आंबेडकर के खराब स्वास्थ्य के कारण दोनों क्रांतिकारी सुधारक व्यक्तिगत रूप से मिलकर संभावित सहयोग पर चर्चा नहीं कर पाए।

6 दिसंबर, 1956 को आंबेडकर का निधन हो गया। लोहिया ने अपने साथी समाजवादी मधु लिमये को लिखा, "आंबेडकर भारतीय राजनीति के महान व्यक्ति थे। गांधी के साथ-साथ वे भी सबसे बड़े हिंदू थे। इस तथ्य ने मुझे हमेशा से एक संबल और विश्वास दिया है कि हिंदू धर्म से जाति व्यवस्था एक दिन खत्म हो सकती है।" उन्होंने आगे लिखा, "डॉ. आंबेडकर विद्वान, ईमानदार, साहसी और स्वतंत्र व्यक्ति थे। उन्हें बाहरी दुनिया में ईमानदार भारत के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता था। लेकिन वे थोड़े सख्त थे। उन्होंने गैर-हरिजन का नेता बनने से मना कर दिया।"

लोहिया ने सोचा कि आंबेडकर के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उन्हें डॉ. आंबेडकर ही बना रहने दिया जाए। जातिगत भेदभाव के प्रति लोहिया की गहरी जागरूकता उन्हें अपने समय के अन्य समाजवादियों से अलग करती है और यही बात उनके 'नारीवाद' पर भी लागू होती है। वे लिखते हैं, "अगर भारतीय लोग पृथ्वी पर सबसे दुखी हैं, तो जातिगत भेदभाव और महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण इस पतन के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं।" लोहिया ने लिखा है, "एक पितृसत्तात्मक समाज में ऐसा होता है कि महिला का स्थान रसोई में है। ऐसे में समाजवादियों को इस बात का विरोध करते हुए कहना चाहिए कि ऐसे में तो पुरुषों की जगह नर्सरी में होनी चाहिए। साठ सालों से यह तर्क दिया जा रहा है कि बच्चों के पालन-पोषण में पति और पिता को बराबरी के साथ हिस्सा लेना चाहिए। यह एक आदर्श स्थिति हो सकती है, लेकिन व्यवहार में ऐसा कहीं दिखता नहीं।"

इस कॉलम में उद्धृत लेख, पत्र और भाषण 1953 और 1961 के बीच लिखे गए थे। ऐसा हो सकता है कि अभी ब्राह्मणवाद राजनीति और प्रशासन पर उतना हावी न हो, जितना 1950 के दशक में था। फिर भी संस्कृति और आर्थिक जीवन में वे आबादी में अपने हिस्से के अनुपात से कहीं ज्यादा प्रभाव डालते हैं। इसलिए कई मामलों में जाति पर लोहिया के विचार और शब्द एक अद्भुत समकालीनता रखते हैं।

शायरी की एक हस्ती को याद करते हुए

बीते चार से ज्यादा दशक यानी तीन पीढ़ियां गजल सम्राट जगजीत सिंह की गजल 'प्यार का पहला खत लिखने में वक्त तो लगता है' सुनती रही है और आने वाली पीढ़ियां भी सुनती रहेंगी। ऐसी असंख्य बेहतरीन गजलें लिखने वाले 78 वर्षीय शायर हस्तीमल हस्ती गुजरी 24 जून को इस फानी दुनिया से अलविदा कह गए।

11 मार्च, 1946 को राजस्थान के आमेर में राजसमंद शहर के एक व्यावसायिक परिवार में जन्मे हस्तीमल के परिवार का दूर-दूर तक साहित्य से कोई वास्ता नहीं था। स्कूल के जमाने से ही अखबारों के जरिये साहित्य के प्रति लगाव के फलीभूत हस्तीमल ने लिखने की शुरुआत कहानी से की थी। पुश्तैनी रूप से सोने-चांदी के आभूषणों का व्यापार करने वाले परिवार से हस्तीमल को सोने, चांदी और हीरे की पहचान का धंधा घुट्टी में मिला था। पुश्तैनी धंधे को मुंबई में जीवन भर बखूबी संभालते हुए हस्तीमल ने अपनी लगन, इच्छाशक्ति और संकल्प के दम पर कहानी लेखन को छोड़ शायरी की दुनिया में प्रवेश किया और ऐसा मुकाम हासिल किया कि जौहरी हस्तीमल से वह हस्तीमल हस्ती हो गए।

राजेन्द्र शर्मा

स्मृति शेष

हस्तीमल हस्ती

सब कहते हैं कि हिंदी में पाठकों की कमी है तो यह बात चौंकाने वाली है कि हस्तीमल हस्ती के तीनों गजल संग्रह हाथों-हाथ बिक गए और अब आउट ऑफ स्टॉक हैं।

प्यार से सरोबार, सादा तबियत इन्सान और बेहद सादा लफ्जों में कमाल के शेर कह देने का हुनर रखने वाले हस्तीमल हस्ती की गजलों को जगजीत सिंह, पंकज उधास, पीनाजी मसानी ने अपने स्वरों से सजाया था।

अपनी बात को कम से कम शब्दों में कहने के पक्षधर हस्तीमल ने छोटी बहर में ऐसी-ऐसी बेहतरीन गजलें लिखीं, जो मील का पत्थर मानी जाती हैं। एक बानगी देखिए- 'उस जगह सरहदें नहीं होतीं, जिस जगह नफरतें नहीं होतीं। उसका साया घना नहीं होता, जिसकी गहरी जड़ें नहीं होतीं।'

हस्तीमल हस्ती बतौर शायर ऐसा लिखने भर के लिए नहीं लिखते थे, उनके व्यक्तित्व में भी ये सारी बातें शुमार थीं। महत्वाकांक्षाओं की राजधानी मुंबई में हमेशा सफेद झक कपड़े पहनने वाले शायर हस्तीमल हस्ती निजी जीवन में भी हमेशा सफेद झक बने रहे। उनके तीन गजल संग्रह 'कुछ और इस तरह से भी', 'क्या कहें किससे कहें' और 'प्यार का पहला खत' प्रकाशित हो चुके हैं। इस दौर में, जहां यह कहा जाता है कि हिंदी में पाठकों की कमी है, क्या यह बात चौंकाने वाली नहीं है कि हस्तीमल हस्ती के तीनों गजल संग्रह हाथो-हाथ बिक गए और आउट ऑफ स्टाक हैं! उनके जाने से एक शून्य-सा पैदा हो गया है, लेकिन उनकी गजलें हमेशा उन्हें अमर रखेंगी।